कृष्णदास संस्कृत सीरीज २९६

कश्यपसंहिता

पाठसंवादसंवलितः 'नारायणी' हिन्दीटीकासहितश्च

पुरोवाक्
प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय

सम्पादकोऽनुवादकश्च
डॉ. चन्द्रमौलि रैणा

सह सम्पादक
डॉ. वर्चस्काम शास्त्री

भूमिका

दिवाकरं ग्रहाधीशं हेरम्बञ्च सरस्वतीम्।
विविच्यते प्रणम्यादौ कश्यपस्यां हि संहिताम्॥

भारतवर्ष में आर्यों की सभ्यता कई प्रकार के प्रमाणों से सिद्ध हो चुकी है; परन्तु भारतीय कला शास्त्र का वास्तविक ज्ञान परिज्ञान हमें पूर्णतया नहीं मिलता, इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र के अनगिनत ग्रन्थ रत्नों का पता ही नहीं लगता, बहुत से देशी-विदेशी राजकीय पुस्तकालयों में वर्तमान काल में भी कुछ दिव्य ग्रन्थ सर्वजन के लिए अलभ्य हैं। ब्रह्मर्षि कश्यप द्वारा विरचित 'कश्यपसंहिता' भी अलभ्य ग्रन्थों में एक है।

समस्त प्राणियों के आधिभौतिक, अध्यात्मिक, आधिदैविक तीन प्रकार के दुःखों को विनाश करने में पूर्णरूपेण सशक्त और चतुवर्ग प्राप्ति के अत्यन्त प्रभावशाली सुन्दर मार्गदर्शक वेद हैं। भारतीय संस्कृति का मूलाधार वेद हैं, वेदों से ही हमें अपने और सदाचार का ज्ञान होता है। हमारी सामाजिक, पारिवारिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं के मुख्य स्रोत भी वेद ही हैं।

*१. शिक्षा, २. कल्प, ३. व्याकरण, ४. निरूक्त, ६ छन्द तथा ६. ज्योतिष इन्हें षड्वेदाङ्गों की संज्ञा दी गई है। मन्त्रों के उचित उच्चारण हेतु शिक्षा का, कर्मकाण्ड और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए कल्पका, शब्दों के सही ज्ञान के लिए व्याकरण का, अर्थ ज्ञान के निमित्त शब्दों के विवेचन के लिए निरूक्त का, वैदिक छन्दों के ज्ञान हेतु छन्द का और अनुष्ठानों के उचित काल निर्णय के लिए ज्योतिष की उपयोगिता सर्वमान्य है।

ब्रह्मर्षि कश्यप ने ज्योतिषशास्त्र और वेद का परस्पर अन्योन्याश्रय भाव सम्बन्ध स्वीकार किया है।

एवं लक्षण संयुक्तमुक्तं स्कन्दद्वयन्ततः।
साम्प्रतं संहिता स्कन्धमेवं लक्षणसंयुतम्॥
वक्ष्येऽहं कश्यप ब्रह्मा हितार्थं देहधारिणाम्।
सम्बन्धस्तस्य शास्त्रस्य वेदाङ्गमिति धातृता॥

(कश्यपसंहिता १-१७-१८)

---

* शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषीश्रोत्रतमुक्तं च कल्पं करौ।
या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः॥

(सि.शि. ग्रहणगिते श्लोक १०)

www.drcmrama.com

वेदों के साथ परस्पर सम्बन्ध होने से ज्योतिष शास्त्र का अत्यन्त महत्त्व सिद्ध होता है। भूतल, अन्तरिक्ष एवं भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थ का त्रैकालिक ज्ञान जिस शास्त्र से होता है वह ज्योतिष शास्त्र है। ब्रह्मर्षि कश्यप ने ज्योतिष शास्त्र अध्ययन का क्या प्रयोजन है? इस सन्दर्भ में निरूपण करते हुए लिखा है-

शुभाशुभस्य जगतामभिधेयं निरूपणम्।
ग्रह ग्रहण संक्रान्तिर्यज्ञाध्ययन कर्मणाम्॥
प्रयोजनं व्रतोद्वाह क्रियाणां कालनिर्णयः।
एतद्विना न सिद्धयन्ति श्रौतस्मार्ताखिलाक्रियाः॥

(क.सं. १-१९-२०)

संसार का शुभाशुभ निरूपण, ग्रहचार, ग्रहण संक्रान्ति, यज्ञ, विद्याध्ययन, व्रतबन्ध, विवाहादि संस्कारों का काल निर्णय ज्योतिषशास्त्र का प्रयोजन है। इस शास्त्र के बिना श्रीत, स्मार्त विहित सभी क्रियाकलाप सिद्ध नहीं हो सकते। ज्योतिष शास्त्र से त्रैकालिक प्रभाव को जाना जा सकता है। गर्भ से लेकर मृत्यु तक और उसके पश्चात् भी परलोक पुनर्जन्म की बातों को ज्योतिष शास्त्र अभिव्यक्त करता है।

ज्योतिष शास्त्र कालबोधक शास्त्र है। इस सन्दर्भ में **'वृद्धवसिष्ठ'** भी लिखते हैं. तद्यथा—

क्रतुक्रियार्थश्रुतयः प्रवृत्ता कालाश्रयास्ते क्रतवोनिरुक्ताः।
शास्त्रादमुष्मात्किल कालबोधो वेदाङ्गताऽमुष्य ततः प्रसिद्ध॥

(वृद्धवसिष्ठसंहिता १-४)

वेदों का प्रवर्तन यज्ञ-क्रियाओं के सम्पादनार्थ हुआ, वे यज्ञकाल के आश्रित कहे जाते है। और काल इस ज्योतिष शास्त्र से जाना जाता है। ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्त, होरा एवं संहिता- ये तीन स्कन्ध हैं। इन तीनों स्तम्भों पर ही ज्योतिषशास्त्र स्वरूप विशाल प्रासाद टिका हुआ है। एक भी स्तम्भ में कुछ हीनता हो जाए तो प्रासाद अवनत हो जाता है अतः ज्योतिष शास्त्र को यथार्थ रूप में समझना हो तो तीनों स्कन्धों का भलीभान्ति ज्ञान परमावश्यक है। ब्रह्मर्षि कश्यप ने तीनों स्कन्धों के सन्दर्भ में विशेष रूप से प्रतिपादन किया है तद्यथा-

सिद्धान्तविषयानुक्रम

ग्रहाणां मध्यमाभुक्तिः स्फुटभुक्तिरनन्तरम्।
दिक्साधनं ततश्छाया लग्नकालविनिर्णयः॥
चन्द्रार्कग्रहणं सम्यक् तयोश्च परिलेखनम्।
समागमोयुद्धभेदो भग्रहाणां युतिस्तथा॥

www.amraina.com

उदयास्तमय ज्ञानं चन्द्रशृङ्गनतोन्नतिः।
पात वैधृतयोर्भेदौ भूगोलं यन्त्रलक्षणम्॥
मान क्रिया मानभेदाश्चाद्य स्कन्धे प्रकीर्तिताः।

(क.सं १-५-७$\frac{१}{२}$)

प्रथम सिद्धान्त स्कन्ध में ग्रहों की मध्यम भुक्ति, स्फुट भुक्ति, दिक्साधन, छाया साधन, लग्नकाल निर्णय, सूर्यचन्द्रग्रहण और उनकी परिलेखन पद्धति, समागम, ग्रहयुद्धभेद, नक्षत्र और ग्रहयुति उदयास्तज्ञान, चन्द्र शृङ्गोन्नति साधन, पात और वैधृति के भेद, भूगोलाध्याय, यन्त्रलक्षण, नवविधमान तथा मानभेद ये सभी सिद्धान्त स्कन्ध में वर्णित हैं।

होराशास्त्र विषयानुक्रमः

राशिभेदः रवेटयोर्निर्जन्मलक्षणम्।
निषेको जननं पुंसामरिष्टं भङ्गलक्षणम्॥
आयुर्दायो दशाभेदाश्चान्तर्दशासु।
अष्टवर्गः कर्मजीवो राजयोगा अनेकशः॥
चन्द्रयोगा द्विग्रहाद्याः प्रव्रज्या योग सम्भवाः।
राशिशीलं दृष्टिफलं ग्रहभावफलं ततः॥
आश्रयाख्याश्च ये योगाः संकीर्ण सम्भवाः।
स्त्रीजातकं नष्टयोगं निर्याणं नष्टजातकम्॥
द्रेष्काणश्च क्रिया योगा द्वितीयस्कन्धसम्भवाः।

(क.सं. १-८/१२)

राशिभेद, ग्रहयोनि, वियोनिजन्म, निषेक प्रकरण, जन्माऽरिष्ट, अरिष्टभङ्ग, आयुर्दाय, दशान्तर दशाओं का भेद, अष्टवर्ग, कर्मजीव, नाना प्रकार के राजयोग, चन्द्रयोग, द्विग्रहयोग, प्रव्रज्या योग, राशि शील, दृष्टिफल, ग्रहों का भावफल, आश्रय योग, संकीर्ण योग, स्त्री जातक, नष्ट जातक, निर्याण, द्रेष्कान और क्रिया योग ये द्वितीय स्कन्ध (होरा शास्त्र) के विषय हैं।

संहिताविषयानुक्रमः

आदौ शास्त्रोपनयनं खेटचारोऽब्दलक्षणम्।
तिथिवासर नक्षत्रयोग तिथ्यर्ध लक्षणम्॥
मुहूर्तोपग्रहः सूर्य संक्रान्तिर्गोचर क्रमः।
चन्द्रताराबलश्चैव क्रियाः षोडशकर्मणाम्॥
छुरिकाबन्धनं यात्रा प्रवेशो वास्तुलक्षणम्।
नृपाभिषेचनं देवप्रतिष्ठावस्त्रलक्षणम्॥

www.dromraina.com

अग्न्याधानं मेघगर्भं निखिलोत्पातलक्षणम्।
तच्छान्तिर्मिश्रकाध्यायस्तृतीय स्कन्धसम्भवाः॥

(क.सं. १-१३-१६)

शास्त्रोपनयन, खेटचार, संवत्सर लक्षण, तिथिवार, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त, उपग्रह, सूर्यसङ्क्रान्ति, गोचर क्रम, चन्द्रताराबल, षोडशसंस्कारों के मुहूर्त, छुरिकाबन्धन, यात्रा, वास्तु, गृहप्रवेश, राजाभिषेक, देहप्रतिष्ठा, वस्त्रलक्षण, अग्न्याधान, मेघगर्भ, उत्पात और उनकी शान्ति, मिश्रका अध्याय ये तृतीय स्कन्ध (संहताशास्त्र) के लक्षण हैं।

ज्योतिष के प्रकर्षों का क्रमबद्ध ज्ञान उपलब्ध नहीं होता फिर भी यह निर्विवाद है कि ज्योतिष शास्त्र में संहिताओं की रचना सर्वप्रथम हुई। इसके प्रमाण फलस्वरूप हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के नाम पर संहिता ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। संहिता ग्रन्थों की रचनाओं के उपरान्त होरा (जातक) ग्रन्थों की रचना हुई; क्योंकि आचार्य वराहमिहिर ने अपने होरा ग्रन्थों में ऋषिमुनियों के नामों की चर्चा की है। इससे सिद्ध हो जाता है कि संहिता ग्रन्थों के निर्माण के पश्चात् ही होरा ग्रन्थों का लेखना हुआ है। ऋग्वेद में ज्योतिषशास्त्र की प्रमाणिकता के उदाहरण मिलते हैं, सनातन धर्म की सब से प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद ही है।

यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः॥
अत्रयस्तमन्वविन्दन् न ह्यान्ये अशक्नुवन्॥

(ऋ. ५:४०-९)

ऋग्वेद के इस मन्त्र में सूर्य-चन्द्र ग्रहण के सन्दर्भ में कहा गया है कि सर्वप्रथम अत्रि ऋषि ने सूर्यचन्द्र ग्रहण को अपनी दिव्य दृष्टि से देखा और इसका ज्ञान सबको दिया। वर्तमान् में भी सूर्य/चन्द्र ग्रहण सम्भव होते हैं, ग्रहण कब, कहाँ, कितने समय के लिए लगेगा इसका ज्ञान केवल ज्योतिषशास्त्रीय गणित प्रक्रिया से होता है। यहाँ विज्ञान विज्ञ अपने आपको शून्य समझते हैं; क्योंकि वे ग्रहण के लिए पूर्व ज्ञान नहीं करवा सकते, केवल मात्र ग्रहण घटित समय (Astrotelescope) से ही बता सकते हैं अतः यह कहना होगा कि ज्योतिष एक दिव्य शास्त्र है, जिसकी संरचना हमारे पूज्य १८ ऋषियों ने की है।

ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक

सूर्यः पितामहोव्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपोनारदो गर्गो मरीचिमनुरङ्गिराः॥

www.drcmraina.com

लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनोभृगुः।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिश्शास्त्र प्रवर्तकाः॥

(क.सं १-२-३)

सूर्य, पितामह, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अङ्गिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु और शौनक ये अष्टादश ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्तक हैं। प्रायशः सभी विद्वानों का मत है कि अष्टादश ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तकों के अपने-अपने संहिता ग्रन्थ थे; परन्तु उन ऋषियों के मध्य में केवल गर्ग, वसिष्ठ, नारद, लोमश, कश्यप इत्यादि ऋषियों द्वारा विरचित संहिता ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं शेष उपलब्ध नहीं होते। इसके अतिरिक्त जैन आचार्यों द्वारा सम्पादित भद्रवाहु संहिता तथा आचार्य वराहमिहिर द्वारा विरचित वाराही संहिता भी सुलभता से उपलब्ध है। बृहत्संहिता के अतिरिक्त नारद संहिता, वृद्ध वसिष्ठ संहिता, इत्यादि मुद्रित रूप में सुलभ हैं; परन्तु अन्य संहिता ग्रन्थ नहीं। मेरे पूज्य गुरुजी डॉ. बिहारीलाल वसिष्ठ जी ने **'कश्यप संहितायाः समीक्षात्मकं सम्पादनम्'** शोध प्रबन्ध राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में पूज्य गुरु जी प्रोफेसर रामचन्द्र पाण्डेय जी के कुशल निर्देशन में विद्यावारिधि (पी.एचडी) हेतु १९८६ में प्रस्तुत किया था उनको ९ मार्च १९८९ को विद्यावारिधि (पी.एचडी) की उपाधि प्राप्त हुई तब से यह दुर्लभ ग्रन्थ श्रीरणवीर परिसर जम्मू पुस्तकालय में पड़ा हुआ था उन्होंने तीन पाण्डुलिपियों के आधार पर पाठ संशोधित किया था मैंने पाठ का हिन्दी रूपान्तर किया है।

हस्त लेखों का परिचय

जम्बुस्थ मातृका	–	३९९१ ग्रन्थानुक्रमाङ्क
पत्रसंख्या	–	१५१
पत्राकार	–	१३.४ × ७.५
पृष्ठेपंक्ति संख्या	–	१३/१४
प्रतिपंक्ति अक्षर संख्या	–	३६ से ४२
लेखन काल लेखक	–	अनुमान से विक्रमी संवत् १९३५ से १९४० तक
लेखक	–	ब्रह्मषि कश्यप
प्रतिलिपिकार	–	नहीं लिखा
नेपालस्थ मातृका	–	२०२४ ग्रन्थानुक्रमाङ्क
पत्र संख्या	–	फोटो प्रतिलिपि में नेपाल काठमाण्डौ से प्राप्त
पत्राकार	–	१५.० × ८.०० पृष्ठ पंक्तिसंख्या - १२
प्रतिपंक्ति अक्षर संख्या	–	४१ से ४८
लेखन काल	–	पता नहीं
लेखक	–	ब्रह्मर्षि कश्यप

www.drcmraina.com

प्रतिलिपिकार – नहीं लिखा
मद्रासीयमातृका – ७९८४ ग्रन्थानुक्रमाङ्क
पत्रसंख्या – १३९
पाण्डुलिपि का आकार-प्रकार – प्रायशः ३० प्रतिशत शब्द कीट भक्षित थे।
पाण्डुलिपि प्राप्ति – के. एन. कृष्ण सरीन, ए सुबरेया भट्ट द्वारा प्राप्त हुई।

सहायक ग्रन्थ–मुहूर्तचिन्तामणि पीयूषधारा, प्रतिमाक्षरा, मुहूर्तसिन्धुः, मुहूर्त दिवाकर, मुहूर्तदर्पण, मुहूर्तभूषण, मुहूर्तमञ्जरी, मुहूर्त माला, ज्योतिःसार, ज्योतिः सर्वस्व, ज्योतिर्निबन्ध सर्वस्व, जगन्मोहन, स्मृतितत्त्व, निर्णयसिन्धुः, धर्मसिन्धु, श्रीरणवीरज्योतिर्निबन्ध इत्यादि अनेक ग्रन्थों की सहायता से पाठ शुद्ध हुआ।

पाठा संवादार्थ गृहीत नियम

भण्डारकर रिसर्च इंस्टीच्यूट पूना, सर्वभारतीय काशी राजन्यास द्वारा गृहीत सारिणी का अनुसरण करके पाठान्तर किया गया है। प्रत्येक अध्याय के पश्चात् क्रमबद्ध विधिसे पाठान्तर दिया गया है। शुद्ध पाठ की सुविधा के लिए पाठान्तर के अन्त में कोष्टक में वाणनिर्देश से शुद्ध पाठ भी लिख दिया है। श्लोकों को पाद के अनुसार (अ.व.स.ड) पाठान्तर किया है। जैसे—इसी प्रकार जिस श्लोक के पाद में जो पाठान्तर या अधिक पाठान्तर उपलब्ध हुए उनका वर्णन श्लोक संख्या, पाद संख्या एवं पाण्डुलिपि संख्या अनुसार दिया गया है। उदाहरणार्थ—

आतङ्कावृष्टि संग्राम दुर्भिक्षानलतोभयम्।
विष्णुद्वय विश्वेन्दु धातृभेषु चरन्बुधः॥

श्लोक संख्या — २ अ. जम्मू-आतक, मद्रास आतकं
(आतङ्कावृष्टि संग्राम)
व, जम्मू- दुर्भिक्षाटन तो (दुर्भिक्षानलतोभयम्)
सज- विष्णभद्वय म-विष्णुद्वितीय (विष्णुद्रय) ज- विश्वेन्दो (विश्वेन्दु)
ड. ज. धातृभीषु (धातृभेषु)

यहाँ पर मूल पाठ के अतिरिक्त प्रसङ्गानुकूल पाठ मिला तो उस पाठ को भी मूल पाठ में दिया हुआ है यदि मूलपाठ से न्यून पाठ पाण्डुलिपि में जहाँ-जहाँ मिला वहाँ-वहाँ पाठोनास्ति लिखा गया है। अध्याय के अन्त में पुष्पिका पाठ भी दिया है, पुष्पिकाओं के मध्य में जो पाठान्तर उपलब्ध हुआ उस का निर्देश भी किया गया है।

हस्तलेखों की संख्या मात्र तीन ही थी, कहीं-कहीं अन्य सहायक ग्रन्थों में उपलब्ध 'कश्यपसंहिता' का पाठ भी शुद्धि करने में सहायक हुआ। जहाँ-जहाँ संदिग्ध पाठ का निर्णय यथामति करके मूलपाठ में स्थापित कर पाठान्तर में दे दिया है। इस का निर्णय स्वयं विद्वान् लोग कर सकते हैं।

www.drcmraina.com

कश्यप संहिता का परिचय

सप्तर्षियों में सर्व प्रथम कश्यप ऋषि का नाम है। अतः ब्रह्मर्षि कश्यप द्वारा विरचित 'कश्यप संहिता' का प्रमुख स्थान है। इस ग्रन्थ में प्रायशः संहिता पदार्थों का सम्यग्तया विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ की रचना स्वयं ब्रह्मर्षि कश्यप ने की है। अतः आर्ष ग्रन्थ के रूप में इस ग्रन्थ की प्रतिष्ठा है। यह सर्वविदित सुप्रसिद्ध हैं कि महर्षि कश्यप का नाम ज्योतिष शास्त्र के अष्टादश प्रवर्तकों में आता है। इस ग्रन्थ में (४९) उन्नचास अध्याय हैं। अध्यायों का वर्गीकरण एवं विषयों का विभाजन क्रमानुसार सुव्यवस्थित विधि से किया गया है। संक्षेप में अध्यायों का विवरण लिखते हैं—

शास्त्रस्वरूपाध्याय से दशम अध्याय पर्यन्त नौ ग्रहों का चार, एकादश अध्याय में नौ विध मानों का पृथक्-पृथक् प्रतिपादन, प्रभवादि षष्टी संवत्सरों के नाम तथा उन के पृथक्-पृथक् शुभाशुभ फलादेश, वर्षेश सेनापति, रसाधिपति निर्णय, सूर्यादि वर्षेश्वरों का फल, दक्षिणायन-उत्तरायण कर्तव्यताकर्तव्य व्यवस्था, षट् ऋतु व्यवस्था, द्वादश अध्याय में तिथियों के स्वामी, प्रतिपदादि तिथियों में कृत्य व्यवस्था, पक्षरन्ध्र तिथियां, दन्तधावन, क्षौरकर्म, तैलाभ्यंग निर्णय, युग कल्पादि तिथियां, सफल-गजच्छायायोग, त्रयोदश अध्याय में वारों की सबल सिद्धि, वार - प्रवृत्ति, बलाबल तथा शुभवारों की प्रशंसा, कुलिक, यमघण्टक अर्धयाम मुहूर्त, क्षणिकवार (होरा) निर्देश, वारप्रवृत्ति, काल होरा, प्रयोजन, चतुर्दश अध्याय में, नक्षत्रों की प्रशंसा, अश्विन्यादि नक्षत्रों के स्वामी, नक्षत्रों का शुभाशुभ फल, अधोमुख संज्ञक नक्षत्र, ऊर्ध्वमुख नक्षत्र, गजकृत्य, अश्व कृत्य, बीजारोपण मुहूर्त इत्यादि पञ्चदश अध्याय में सत्ताईस योगों के स्वामी, त्याज्य योग, एकार्गल-खार्जूरिक चक्र, सोलहवें अध्याय में करणों के स्वामी, भद्रा का अङ्ग विभाग, सप्तदश अध्याय में मुहूर्तों की प्रशंसा, दिवा रात्रि मुहूर्त, दिवा, पौराणिक मुहूर्त, अभिजित, कुतपलक्षण क्षणिक पञ्चाङ्ग निर्णय, अष्टादश अध्याय में उपग्रहों के नाम तथा ज्ञान, कक्रच-संवर्त योगों का वर्णन, उन्नीसवें अध्याय में सफल संक्रान्तियों के नाम, नक्षत्रानुसार संक्रमण फल, सूर्य की उदित सुप्त अवस्था, नक्षत्रों की अन्ध-मन्द सुलोचनादि संज्ञा, संक्रान्तियों का पुण्यकाल निर्णय, क्रूर फल की निवृत्ति हेतु दान, सूर्य-चन्द्र एवं ताराबल की विशेषता, वीसवां गोचराध्याय, कैसे ज्योतिषी की निन्दा, ग्रहों की निष्फलता, नव ग्रहों के रत्न, इक्कीसवां चन्द्रताराबलाध्याय, जन्म-सम्पत्, विपद क्षेमादि नौ ताराओं के नाम एवं फल, वाइसवें अध्याय में मेषादि द्वादशलग्नों के कृत्य, राशियों तथा ग्रहों का शुभत्व एवं पापत्व, ग्रहों की युति-दृष्टि से राशियों का स्वभाव परिवर्तन, चौर्यकाल वर्णन, शस्त्र शास्त्र अभ्यासियों का सिद्धिकाल-श्रुति-स्मृति पुराणोक्त धर्म कार्यों का प्रारम्भकाल, चन्द्रमा का बलाबल निरुपण, ग्रहों का शुभाशुभत्व निर्णय-तेईसवें प्रथमार्तवाऽध्याय में प्रश्न लग्न से विचार, रविवारादि

www.drcmraina.com

वशात् प्रथम रजोधर्म का फल, नक्षत्र वशात् प्रथमार्तव का फल, निन्द्य पञ्चाङ्ग में पुष्पदर्शन, आधान मुहूर्त एवं गर्भ में पुत्र-पुत्री ज्ञान, चौबीसवें अध्याय में पुंसवन मुहूर्त विचार, मासाधिपति, लग्न एवं ग्रह शुद्धि विचार, सीमन्त में लग्न शुद्धि विचार- पच्चीसवें अध्याय में जातकर्म, नामकरण, छब्बीसवें अध्याय में शिशुओं का अन्नप्राशन काल निर्णय, अन्नप्राशन लग्न में भिन्न-भिन्न ग्रहों का फल, सताईसवें अध्याय में चौलकर्म, चौल कर्म में पञ्चाङ्ग शुद्धि, जन्म नक्षत्र में शुभकार्य, प्रशस्ति, क्षौर कृत्य, कार्य विशेष में क्षौर कर्म सर्वकालिक, अट्ठाईसवें अध्याय में उपनयन प्रयोजन एवं काल निर्णय, यज्ञोपवीत के लिए पञ्चाङ्ग शुद्धि, व्रतबन्ध में उपयुक्त नक्षत्र, उन्नत्तीसवें अध्याय में समावर्तन में काल शुद्धि, मृण्यमय-वंश पात्रों में देवपूजा विधान, मङ्गल कृत्यों में अंकुरारोपण, तीसवें अध्याय में विवाह प्रश्न लक्षण, तीन प्रकार के ऋण, चतुर्वर्ग प्राप्ति में मूल हेतु वर्णन, विवाहलग्न वशात् दम्पति का आयुष्य निर्धारण, कन्या को वर/वर को कन्या प्राप्तियोग, इकत्तीसवें अध्याय में उत्तम मुहूर्त में वाग्दान करने से पुत्र-पौत्र विवर्धन, वाग्दान मुहूर्त में पञ्चाङ्ग शुद्धि, वाग्दान विधि निरूपण, बत्तीसवें अध्याय में विवाह के लिए उपयुक्त समय व्यवस्था, चतुर्मास्य में मङ्गल कृत्यों का निषेध, श्री विष्णु प्रसुप्तावस्था में गुरुशुक्रास्त विचार, वृद्ध एवं अस्तंगत चन्द्रमा का प्रभाव, जन्ममासादि व्यवस्था, त्रिज्येष्ठ विचार, विवाह में गुरु-सूर्य का बल तिथि, वार, नक्षत्रादि का उत्तरोत्तर बलत्व प्रतिपादन, इक्कीस प्रकार के महादोष, इक्कीस दोषों का शुभाशुभ फल, षड्वर्ग विभाग, शुभाशुभ वर्ग विचार, भृगुषट्क योग, कुजाष्टमयोग, उद्वास्त शुद्धि, अशुद्धि कथन, दुर्मुहूर्त दोष, कालकूट दोष, विषघटी दोष, कुलिक, यमघण्टक, अर्धयाम संज्ञक वारदोष एवं शुभाशुभ फल, ग्रहण एवं उत्पात दोष, अकालिक गर्जित वृष्टि दोष, संवैधृति महापातदोष, संक्रान्तिदोष संग्रहदोष युक्त लग्न का फल, कर्तरीदोष लग्नफल, गण्डदोष युक्त लग्न फल, पापषड्वर्ग युक्त लग्न का फल, भृगुषट्क दोष, अष्टम भौम युक्त लग्न का फल, दुर्मुहूर्त दोष युक्त लग्न का फल, वरवधु विवाहलग्न का फल, विषनाड़ी, कुनवांश दोष, वारदोष युक्त लग्न का फल, खार्जूरिक दोष, उत्पात, ग्रहण, नक्षत्र, वृद्धक्रूर, अवशिष्ट अल्पदोष, लग्न निश्चयार्थ जलयन्त्र निर्माण, विवाह वेदिका निर्माण, विवाहलग्नस्थ ग्रहों का फल, अष्टकूट व्यवस्था योनि विवेक, नाड़ी दोष परिहार, तारा विवेक, वर्ग, राशिकूट व्यवस्था, अष्टविध विवाहलक्षण, अभिजित् गोधूलिलग्न प्रशंसा, सहोदर कन्याओं का छः मास के भीतर विवाह निषेध, सहोदर कन्याओं के विवाह की व्यवस्था, मूला आश्लेषा में उत्पन्न पुत्र-पुत्री का विचार, विवाह के पश्चात् वधु प्रवेश व्यवस्था, तेतीसवें अध्याय में दहन व्यवस्था, सपिण्डीकरणात् श्राद्ध के लिए निषिद्धकाल, महालय पक्ष में श्राद्ध महत्त्व, चौतीसवें अध्याय में छुरिका बन्धन का शुभ मुहूर्त, ध्वजादि संज्ञक छुरिका फल वर्णन, पैंतीसवें अध्याय में प्रश्न लग्न, शकुनादि द्वारा

www.drmraina.com

यात्रा फल, दिशाशूल, नक्षत्रशूलादि, विचार, लालाटिका योग एवं फल विचार, दक्षिण दिशा में यात्रा विचार, दक्षिण दिशा यात्रा में पंचक निषेध, राहुमुख एवं पुच्छ विचार, ग्रहस्थित्या जयपराजय विचार, यात्रा में द्वादश भाव विचार, योग, नक्षत्र, मुहूर्त शकुनादि विचार, विजय यात्रा योग, विजयदशमी यात्रा में शकुन विचार, यात्रा से पूर्व ग्रहों की शान्ति, प्रस्थान निर्णय, सिद्धिप्रद निमित्तों का विचार, शुभाशुभ शकुन विचार, सिद्धिप्रद निमित्तों का वर्णन, विरुद्ध शकुनादि में प्राणायाम् छिक्का विचार, युद्धयात्रा में कर्त्तव्यता विचार, छत्तीसवें अध्याय में नवगृहप्रवेश में समय शुद्धि, ग्रहशुद्धि, सैत्तीसवें अध्याय में क्षेत्र स्वीकरणम् भूशुद्धि, गर्तलक्षण एवं द्वार निर्णय, एकशीति पदात्मक वास्तु न्यास, शुभाशुभांश निर्णय, गृहारम्भ में नक्षत्रवशात् ग्रहयोग विचार, मास शुद्धिः, अष्टवर्ग विचार, आय-ऋण विचार, सम-विषमाय तारा विचार, वास्तुमुखादि विचार, वास्तुस्थापनम्, शङ्कु न्यास का फल, ग्रहशाला भेदविचार १६ प्रकार के घरों का विचार, सर्वतोभद्र, नन्द्यावर्त वर्धमान, स्वस्तिकादि घरों के लक्षण, घर बनाने का क्रम, पूर्वादिक्रम से आयादि विचार, अष्टधा जलस्राव वर्णनम्, घर में अनुपयोगी काष्ठ विचार, दिशानुसार पितृ-भ्रात्रादि घर का विचार, घर में कूप, मङ्गलकारी वृक्षों का विचार अठत्तीसवें अध्याय में एकशीति पदात्मक वास्तु प्रतिष्ठा का महत्व, उन्नतालीसवें अध्याय में राजाभिषेक में गुरुशुक शुद्धि, राजा के जन्माङ्ग के अनुकूल ग्रहशुद्धि विचार, ग्रह गोचर एवं लग्न शुद्धि, चालीसवें अध्याय में कालशुद्धि, लग्नशुद्धि, पञ्चाङ्ग शुद्धि एवं ग्रह शुद्धि कथन इकतालीसवें अध्याय में अश्विनीभाद् वस्त्र धारण फलम्, नवधावस्त्र में देवनर पिशाचादि वर्णन, शङ्ख चक्रादि विभिन्न आकृतियों का फल, निन्दित वस्त्र परित्याग विधि, निन्द्यवार नक्षत्रादि में वस्त्रधारण विचार, बयालीसवें अध्याय में अग्नित्रय सेवी प्रशंसा, अग्न्याधान में लग्न चन्द्रतारादि शुद्धि, तैंतालीसवें अध्याय में वर्षा प्रश्न विचार, बुध-शुक्र-सूर्यादि ग्रहों का विशेष विचार, प्राच्य-प्रतीच्य नक्षत्रानुसारी शुक्र का फल, ग्रहोदयास्तार्द्रा प्रवेश समय वर्षायोग, वृष्टियोग विशेष, सद्योवृष्टि निमित्तानि, चौवालीसवें अध्याय में काकसंभोगक्षणोत्पात शान्ति, कुण्ड निर्माण, पूजा विधि, शान्ति विधान, कपोत, पिङ्गल मधुवल्मीक दोष शान्ति, पञ्चतालीसवें अध्याय में सकलोत्पात दर्शन लक्षण शान्ति, छ्यालीसवें अध्याय में शिथिली जनन विचार, दिशा भेद से शिथिली विचार, स्थानभेद से शिथिली फल, शिथिली दोष विधान, दिशा अधिपतियों की समिधाओं के नाम, व्याहृति मन्त्रों द्वारा अभिषेक, मृत्यु रूप प्रतिमा का दान, सैंतालिसवें अध्याय में इन्द्रलुप्तादि दूषित शरीर दोष शान्ति, अड़तालीसवें अध्याय में निखलोत्पात लक्षण, उल्का लक्षण, परिवेष लक्षण, इन्द्रचाप लक्षण, गन्धर्वनगर लक्षण, प्रति सूर्यलक्षण, निर्घात लक्षण, दिग्दाहलक्षण, रजो लक्षण, भूकम्प लक्षण, उनचासवें मिश्रकाध्याय के अन्तर्गत राजा का आचार निर्देश, पञ्चाङ्ग सप्ताङ्ग मन्त्र

www.drcmraina.com

सिद्धि एवं राजा के गुण, राजा के नियम, विभिन्न दातुन प्रकार एवं लाभ-हानि, अश्व शान्ति, दीपावली को तैलाभ्यंग विचार, जन्माष्टमी विचार, शून्य संज्ञक तिथियां, गण्डमूल शान्ति विधान, १० प्रकार की औषधियों का वर्णन, बालक के अरिष्ट योग विचार, बालाऽरिष्टभङ्गयोग, नक्षत्रानुसार शुभाशुभ फल, जन्म नक्षत्र का नवांश के अनुसार शुभाशुभफल मिलते हैं इस प्रकार उनचास अध्यायों में ग्रन्थ की समाप्ति हो जाती है। इस ग्रन्थ में प्रयुक्त श्लोक एवं विषय आर्ष हैं तथा स्वयं ब्रह्मर्षि कश्यप द्वारा प्रणीत हैं इस ग्रन्थ पर अन्य ऋषियों और आचार्यों का प्रभाव नहीं है, प्रायशः सभी आचार्यों ने तथा समकालीन पराशरादि ऋषियों ने भी कश्यप ऋषि के श्लोकों एवं मतों को अपने-अपने ग्रन्थों में उधृत किया है अतः इस ग्रन्थ की प्राचीनता आर्षत्व स्वयमेव सिद्ध हो जाता है।

कश्यप संहिता ग्रन्थ की विशेषता

कश्यप संहिता के उनचास (४९) अध्याय हैं सभी अध्यायों के अनुसार श्लोकों की पूर्ण संख्या १६०५ बनती है, सभी विषय मौलिक, श्लोक आर्ष और कश्यप ऋषि द्वारा प्रणीत हैं।

ग्रन्थ की भाषा सुस्पष्ट, और सरल है विषयों के विवेचन में कोई कठिनाई कहीं भी प्रतीत नहीं होती।

संहिता ग्रन्थों में जो प्रतिपाद्य विषय होते हैं, उन सभी विषयों का समावेश कश्यप संहिता में नहीं मिलता और जो विषय इस संहिता में दिए गये हैं वे पूर्णतया स्पष्ट है। पञ्चाङ्ग परिचय, तिथि, वार, योग, नक्षत्र तथा करण इत्यादि पाँच अङ्गों का विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता है। मुहूर्तों का सम्बन्ध संहिता ग्रन्थों के साथ पुराना था; परन्तु आधुनिक संहिता ग्रन्थों में मुहूर्तों का अवलोकन नहीं कर सकते; परन्तु कश्यप संहिता में मुहूर्तों के विषय में विशेष चर्चा मिलती है। मेषादि द्वादश लग्नों के कृत्य, राशियों का शुभत्व एवं पापत्व, ग्रहों का शुभत्व एवं पापत्व, धर्मारम्भ एवं अभिचार योग प्रशस्ति—

गुरौ लग्ने चतुर्थेऽर्के धर्मारम्भः प्रशस्यते।
दशमेऽर्के गुरौ लग्ने त्वभिचारः प्रशस्यते॥

(क.स. अ.२२/२५)

गुरु लग्न में, सूर्य चतुर्थ में ऐसे योग में धर्मारम्भ शुभ होता है, दशम में सूर्य, लग्न में, गुरु होने पर अभिचार प्रशस्त माना गया है, धर्मारम्भ और अभिचार में देवगुरु बृहस्पति को लग्न में स्वीकार किया है केवलमात्र सूर्य की स्थिति में परिवर्तन आने से फलादेश में परिवर्तन आ गया है, ऐसे कई उदाहरण इस ग्रन्थ की शोभा बढ़ा रहे हैं।

www.drcmraina.com

मुहूर्तों के अभूत संक्रान्तियों, उपग्रहदोषों ग्रह कूटों, षोडश संस्कारों का वर्णन विस्तार से किया गया है, विवाह सम्बन्धी प्रश्न, विवाहसंस्कार का अत्यन्त विस्तृत विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता में चार चान्द लगा रहा है, विवाहाध्याय में प्रायशः सभी प्रमुख दोषों का विवेचन, त्याज्य दोषों का परिहार यात्रा मुहूर्तों के लिए शास्त्रीय विवरण उपलब्ध है। निखिलोत्पाताध्याय में उल्का लक्षण, परिवेष लक्षण, इन्द्रचाप लक्षण, गन्धर्व नगर लक्षण, प्रति सूर्य लक्षण, निर्घात लक्षण, दिग्दाह लक्षण, रजोलक्षण, भूकम्पलक्षणादि विषयों से परिपूर्ण, वास्तु प्रकरण में विशेष महत्वपूर्ण विषयों का प्रतिपादन किया हुआ है। गण्डमूल शान्ति विधान, सर्वोषधियो का वर्णन, बालक के अरिष्ट योग विचार, नक्षत्र वशात् जातक के जीवन में शुभाशुभ फल—

सुभगः पण्डितः शूरो दयालु धार्मिको धनी।
कलाभिज्ञः सत्यरतः पुष्यर्क्षजोऽलसः॥
धूर्तः शूरः क्रूरचेष्टः परदार रतः शठः।
अवक्रो व्यसनी दान्तः सार्पनक्षत्र जोनरः॥

भाग्यवान, पण्डित, शूरवीर, दयालु, धर्मप्रिय, धनवान, कलाओं का ज्ञाता, सत्य सम्पन्न, आलसी जातक पुष्य नक्षत्र में जन्म लेता है, आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक धूर्त, शूरवीर, क्रूर चेष्ट, परस्त्रीलम्पट, शठ, कुटिल सदृश, व्यसनी एवं चातुर्य सम्पन्न होता है

सद्योवृष्टि लक्षण, काकमैथुन दर्शन, विभिन्नधा शिथिली विचार, शिथिलीजनने शान्ति, विचार इत्यादि विषयों से परिपूर्ण यह एक अद्भुत ग्रन्थ है।

कश्यप संहिता का संहिता ग्रन्थों में एक विशेष स्थान है। इस की शास्त्रीय विशेषता ही नहीं; अपितु ऐतिहासिक महत्व भी है, इसी कारण वश इस ग्रन्थ का सम्पादन एवं हिन्दी रूपान्तर करने का विचार मेरे मन में आया, अत्यन्त प्रयास से विभिन्न स्थानों से पाठ संकलन करके पूज्य गुरुजी डॉ. बिहारी लाल वसिष्ठ जी ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से शुद्ध श्लोकों का गुम्फन किया था, अतः हिन्दी रूपान्तर करने में मुझे कोई भी समस्या नहीं हुई। गुरुजी का शुभाशीर्वाद मेरे साथ है।

इस ग्रन्थ के रचनाकाल के सन्दर्भ में कोई चिन्तनावसर मैंने नहीं देखा; क्योंकि सर्वत्र ब्रह्मर्षि कश्यप का नामोल्लेख बार-बार विभिन्न ग्रन्थों एवं टीकाओं में उपलब्ध होता रहा। इसलिए आर्ष रूप में इस ग्रन्थ की महिमा को समझते हुए काल विवेक को मैंने परित्यक्त कर दिया। यहाँ कहीं भी पाठ निर्धारण करने में प्रमादवश भ्रान्ति या अनुचित पाठ गृहीत हुआ हो, तो अध्याय के अन्त में दिए हुए पाठान्तर से विद्वानों को संशोधन का अवकाश प्राप्त है, नीरक्षीर विवेकी चतुर विद्वान् मेरे इस प्रयास से सन्तुष्ट होंगे; ऐसा मेरा विश्वास है।

www.drcmraina.com

इस महत्त्वपूर्ण कार्य में जिन-जिन विद्वानों की सहायता प्राप्त हुई, उनके प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करना चाहता हूँ। सर्वप्रथम जम्मू कश्मीर राज्य के साकेतवासी महाराजाधिराज महाराजा रणवीर सिंह जी का आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी विचक्षण बुद्धि से प्रमुख संस्कृत विद्वानों द्वारा पाण्डुलिपियों का लेखन करवा कर श्रीरघुनाथ अनुसन्धान पुस्तकालय श्रीरघुनाथ मन्दिर में पाण्डुलिपियों का संग्रह करवाया, साथ में महाराजा डॉ. कर्ण सिंह जी (भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री, सदरे रियासत) का भी आभारी हूँ, जिन्होंने अभी तक हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का खजाना सम्भाल कर रखा है, यदि पुस्तकालय में कश्यपसंहिता की पाण्डुलिपि न मिलती तो यह अमुल्य, अत्यन्त दुर्लभ ग्रन्थ सब के सामने कैसे आता।

ज्योतिष एवं संस्कृत के लिए देश-विदेशों में सर्वोत्तम योगदान देने हेतु राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान सङ्काय प्रमुख चर परम पूज्य गुरुजी प्रो० रामचन्द्र पाण्डेय जी के प्रति श्रद्धापूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में यह कार्य करने में समर्थ हुआ।

मेरे प्रेरणा स्रोत दैवज्ञ केसरि केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणवीर परिसर कोट भलवाल, जम्मू ज्योतिष विभाग के अध्यक्षचर परमधाम निवासी पूज्य गुरुजी डॉ. बिहारिलाल वसिष्ठ जी का हार्दिक धन्यवाद करते हुए सन्तोषानुभूति हो रही है, उन्होंने वास्तव में मुझे संस्कृत एवं ज्योतिष शास्त्र पढ़ने की प्रेरणा दी और मेरी हर प्रकार से सहायता की, मैं सदैव आप का आभारी रहूँगा।

'कश्यप संहिता' ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद की प्रेरणा की एक विचित्र कथा है, उसे लिखे बिना मुझे सन्तोष नहीं होगा, पूज्य गुरुजी डॉ० बिहारिलाल जी जब बहुत बीमार हुए तो मैं उनसे मिलने के लिए उन के निवास पर गया मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कमलेश शास्त्री भी मेरे साथ थी, गुरुजी को भूमि पर लिटा दिया गया था। प्रायशः अचेत अवस्था में ही थे। उनकी सुपुत्री भगवान शालिग्राम का चरणामृत उन के मुख में देती जा रही थी और गुरु जी पीते जा रहे थे। यह क्रम एक-दो दिन से चल रहा था। मैंने गुरु जी को उच्च स्वर में प्रणाम कहा गुरुजी के नेत्र खुले, उन्होंने मुझे देखा और अपने हाथ से लिखने का सङ्केत किया। मैं समझ नहीं सका, चिरकाल तक हम दोनों गुरु जी के समीप बैठे रहे; परन्तु गुरुजी कोई भी बातचीत नहीं कर सके। इसी चिन्ता में हम अपने घर आ गए।

घर आकर गुरुजी के लिए चिन्तन करते रहे। रात्रिकाल में पूर्णरूपेण निद्रा भी नहीं आई लगभग ब्रह्ममुहूर्त के आसपास निद्रा आई तो गुरुजी स्वप्न में आए, बोरा भर के पुस्तकें मेरे घर में रखी सब से ऊपर 'कश्यप संहिताया: समीक्षात्मक सम्पादनम्' शोध प्रबन्ध रखा था। मैंने कहा गुरु जी! यह आपका शोध प्रबन्ध है। गुरु

www.dromraina.com

जी ने कहा अब अगला कार्य तुम्हारा है मेरी नींद खुल गई! मैं नित्यप्रति सन्ध्या और शालिग्राम पूजा करके लगभग नौ बजे परिसर जाने के लिए सोच ही रहा था मुझे गुरुजी के लिए सन्देश मिल गया गुरु जी हमें छोड़ कर जा चुके थे- हिन्दी रूपान्तर करने की आज्ञा मुझे स्वप्न में देकर ही गुरुजी साकेत धाम चले गए। जो भी कार्य मैं कर पाया हूँ सब गुरु जी ने करवाया ऐसी मेरी मान्यता है।

गो ब्राह्मण प्रतिपालक सन्त शिरोमणि श्री प्रभुदास जी मेरे धर्म गुरु हैं, उनको नतमस्तक होकर प्रणाम करते हुए शुभाशीर्वाद की निरन्तर कामना करता हूँ। उनका आशीर्वाद सदैव मुझे मिलता रहे। परम श्रद्धेय गुरु कल्प पूज्य पिता जी पं. रामेश्वर दत्त रैणा एवं पूज्य माता श्रीमती शान्ति देवी जी को प्रणामाञ्जलि समर्पण करता हूँ, जिनके शुभाशीर्वाद से संस्कृत एवं ज्योतिष शास्त्र अध्ययन में प्रवृत्ति हुई तथा सभी कार्य सम्पन्न हुए, वे दोनों वैकुण्ठ धाम से मुझे शुभाशीर्वाद दे रहे होंगे।

विविध प्रकार से सहायता देने वाले स्वर्गीय ठा. दिवाकर सिंह जी को भावभीनि श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ और श्रीरघुनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। परमादरणीया रानी साहिबा श्रीमती सरोज देवी जी को शुभाशीर्वाद देते हुए उनके स्वस्थ की मङ्गल कामना करता हूँ। भगवान् श्रीरघुनाथ जी सदैव आप पर कृपालु रहें।

'नारायणी' स्वरूपा सद्भार्या श्रीमती कमलेश शास्त्री जी को शुभाशीर्वाद देते हुए श्रीरघुनाथ जी से प्रार्थना करता हूँ कि हमारी प्रेमभरी यात्रा चलती रहे और हम ईश्वर चिन्तन, दान, जपादि में संलग्न रहें।

श्रीमती एवं डॉ. शिवप्रसाद रैणा तथा श्रीमती एवं श्री रवीन्द्र रैणा दोनों अनुजों को आशीर्वाद देते हुए उनकी सफलता की कामना करता हूँ।

मेरे सुपुत्र चिरंजीवी पीयूष रैणा एवं पुत्रवधु सौभाग्यवती प्रिया रैणा और पौत्र श्री रघुवर रैणा, श्री नियन्त रैणा तथा सुपुत्री प्रोफेसर महिमा रैणा; इन सब को मेरा साधुवाद शुभाशीर्वाद।

कृतज्ञता

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर के निर्देशक प्रो० सुदेश शर्मा जी, प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी अध्यक्ष वास्तुशास्त्र विभाग, कुलपतिचर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, प्रो० विमलेशचन्द्र शास्त्री, प्राचार्यचर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्रीरणवीर परिसर कोटभलवाल, जम्मू, डॉ. वर्चस्काम शास्त्री, सहायकाचार्य राजकीय महिला महाविद्यालय, कठुआ (जम्मू कश्मीर), Lt Gen (Retd) J.S BHATNAGAR, PVSM, AVSM, VSM Former Di-

www.drcmraina.com

rector General Supplies & Transport Former Honorary ADC to the President of India. मान्यवर जितेन्द्रस्वरूप भटनागर जी इन सबके प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने 'कश्यप संहिता' पुस्तक के लिए शुभाशंसा लिखकर पुस्तक को गौरवान्वित किया और मेरे कार्य के प्रति अपनी-अपनी सन्मति प्रदान की, मैं एतदर्थ सभी महानुभावों के प्रति कृतज्ञ रहूँगा। इस पुस्तक के लिए जिन-जिन ग्रन्थों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता ली है, उन सभी ग्रन्थलेखकों के प्रति नतमस्तक सम्मान पूर्वक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। पुस्तक लेखन में मेरे सुहृद् हृदय प्रो० राम दास शर्मा जी ज्योतिष विभागाध्यक्ष श्रीरणवीर परिसर जिन्होंने समय-समय पर मेरा उत्साहवर्धन करते हुए निरन्तर सहयोग किया है मैं उनका हृदय की गहराईयों से धन्यावाद करता हूँ और उनको साधुवाद एवं शुभाशीर्वाद प्रदान करता हूँ कि वे निरन्तर उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त रहें।

वाराणसी के सुप्रसिद्ध प्रकाशक चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस के चिरंजीवी सचिन गुप्त को साधुवाद देता हूँ, जिन्होंने प्रकाशन में अपनी रुचि दिखलाते हुए सोत्साह पूर्वक कार्य सम्पन्न किया।

मेरे प्रिय श्री राजेन्द्र सौगुनियाँ जी ने समय-समय पर आवश्यकता होने पर टंकन कार्य में श्रम तथा निष्ठा से सहायता की, आपका हृदय से आभार प्रकट करते हुए मङ्गल कामना करता हूँ।

अनवधानवश अथवा मुद्रण दोष से कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो पण्डितगण निष्पक्ष रूप से सुधार करके मुझे सूचित करें, ताकि अग्रिम संस्करण में पुनः शुद्ध करके विद्वान् सज्जनों के सामने प्रस्तुत कर सकूँ। कहा भी है-

गच्छतः स्खलनं स्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

विदुषां वशंवदः
चन्द्रमौलिरैणा

www.drcmraina.com

विषयानुक्रमणिका

विषय — पृष्ठांक

शास्त्रस्वरूपाध्याय-१

मङ्गलाचरणम् १
ज्योतिषशास्त्र प्रवर्त्तक १
त्रिस्कन्धज्योतिषनिरूपणम् १
"सिद्धान्त विषयानुक्रमः" २
"होराशास्त्रविषयानुक्रम" २
संहिता विषयानुक्रम २
संहिता प्रतिज्ञा ३
ज्योतिष अध्ययन का प्रयोजन ३
ब्राह्मणलक्षणम् ३

सूर्यचाराध्यायः-२

अहंसप्रतिक्षयमासलक्षणम् ६
क्षयमासाधिमासनिर्णय ६
क्षयाधिमास में शुभकार्यवर्जित ६
"अश्विन्यादि नक्षत्रों में गोचरगत सूर्यफल" ७
आर्द्रा प्रवेश की विशेषता ७
पुनर्वसु इत्यादि नक्षत्रों में सूर्यफल ७
तामसकीलकछादितरविमण्डलफल ८
चन्द्रमण्डल का वर्णन ८
तामसकीलकादि उत्पात वर्णन ९
सूर्य का रश्मिवशात शुभाशुभफल ९
ऋतुवशात सूर्य का वर्णफल ९
सूर्यचार विशेषता १०

चन्द्रचाराध्यायस्तृतीयः-३

अदृश्यचन्द्र के लक्षण १५
चन्द्रमा का अनागत, मध्य, अतिक्रान्त त्रिविध नक्षत्रों का संयोग १५
स्वाति, ज्येष्ठा, आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, भरणी अर्द्धभोगी १५

चन्द्रमा की अर्ध, सार्ध, समभोगी नक्षत्रों में फल १५
चन्द्रमा का नक्षत्रानुसार याम्य सौम्य गमनफल १६
चन्द्रमा का आकारवशात् फल १६
ग्रहों द्वारा खण्डितचन्द्रबिम्बफल १६

भौमचाराध्यायः-४

भौमचार प्रतिज्ञा, उष्णमुखभौमलक्षण १९
अश्रुमुखसर्पमुख भौमलक्षण १९
रूधिरमुख, मुसलमुखभौमलक्षण १९
योगवशात् भौम का विशेषफल १९
नक्षत्रवशातसंचार की विशेषता एवं फल २०
दक्षिणगामी तथा उत्पातकृद् मंगल का फल २०

बुधचाराध्यायः-५

बुधोदयफल २३
बुध का नक्षत्रानुगामीफल २३
नक्षत्र वशाद् बुध की प्राकृतादि गतिफल २४
मासवशात् बुधोदयास्त फल २४

गुरुचाराध्यायः-६

कार्त्तिकादि वर्षों के नाम तथा काल २७
कार्त्तिकादि वर्षों के अनुसार शुभाशुभफल २७
सौम्ययाम्यमार्गगतगुरुफल २९
वर्णानुसारगुरुफल २९
संवत्सर पुरुषाङ्गों के विभागानुसार नक्षत्रों का फल २९
मेषादि राशिगत गुरु का फल २९

शुक्रचाराध्यायः-७

तीन-तीन वीथियों का मार्ग वर्णन ३५
नौ वीथियों के नाम ३५
सौम्य मार्गगत तीन वीथियों में शुक्रफल ३५
मध्यमार्गगत तीन वीथियों में शुक्रफल ३५
नक्षत्रानुसारिशुक्रफल ३५
बुधशुक्र का समोपस्थ फल तथा दोनों के मध्य में सूर्य का फल ३६

www.dromraina.com

कृष्णपक्षीय पर्वों में शुक्रोदयास्तफल ३६
गुरुशुक्र का स्थितिवश विशेषफल ३६
शुक्र के आगे ग्रहों का फल ३६
एकराशिगत चार से अधिक ग्रहों का फल ३६
वक्री ग्रहों का फल एवं विशेषता ३७

शनिचाराध्यायः-८

नक्षत्रों के अनुसार शनिफल ३९

राहुचाराध्यायः-९

राहु की ग्रहत्त्व सिद्धिः ४०
पर्वों पर ग्रहण कथन ४०
कल्पादिसप्तपर्व देवताओं केनाम तथा फल ४०
एक मास सूर्यचन्द्रग्रहण ४१
ग्रस्तोदित, ग्रस्तास्त ग्रहणफल ४१
अयनानुसार सूर्य/चन्द्रग्रहण फल ४१
ग्रासमोक्षादि के भेद ४१

केतुचाराध्यायः-१०

केतु के उदयास्त लक्षण ४४
भिन्नरूपों में केतुफल ४४

संवतत्सराध्यायः-११

नवमानानि ४९
नैविधमानों का पृथक् पृथक् प्रतिपादन ४९
प्रभवादिषष्ठी संवत्सरों के नाम ४९
पञ्चवर्षीय द्वादशयुग एवं स्वामियों का वर्णन ५०
प्रभवादिसंवत्सरों का पृथक्-पृथक् कथन ५१
वर्षेश सेनापति, रसाधिपति निर्णय ५९
सूर्यादि वर्षेश्वरों का फल ५९
शुभ ग्रहों का मन्त्री होने का फल ६०
दक्षिणायन-उत्तरायण व्यवस्था ६०
षट्ऋतु व्यवस्था ६१

www.drcmraina.com

तिथिलक्षणाध्यायः-१२

तिथियों के स्वामी ७१
तिथियों की नन्दादि संज्ञा ७१
प्रतिपदादि तिथियों में कृत्यव्यवस्था ७१
पक्षरन्ध्रतिथियां ७४
दन्तधावन क्षौरकर्म, तैलाभ्यंग, आमलक स्नान में वर्जित तिथियों का शुभाशुभफल ७४
अनुमति, राका, सिनीवाली, कुहुलक्षण ७४
युग, कल्प, मन्वादि तिथियां ७५
सफल-गजच्छायायोग ७५
क्षय, वृद्ध, सूक्ष्म, अखण्ड तिथियां तथा करण का निर्देश ७६

वाराध्यायः-१३

वारों की सबलसिद्धि ८१
क्रमशः वारों की संज्ञा ८२
क्रमशः वारों नें तैलाभ्यङ्ग का फल ८२
वारप्रवृत्ति, बलाबल तथा शुभवारों की प्रशंसा ८२
सूर्यादि ग्रहों का वर्ण तथा फल ८३
कुलिक, यमघण्टक-अर्धयाम मुहूर्त्त ८३
क्षणिक वार (होरा) निर्देश ८३
वार प्रवृत्ति, कालहोरा का प्रयोजन ८४

नक्षत्राध्यायः-१४

नक्षत्रों की प्रशंसा ८७
अश्विन्यादि २८ नक्षत्रों के स्वामी ८७
अधोमुख संज्ञक नक्षत्र ९०
तिर्यङ्मुखनक्षत्र ९०
ऊर्ध्वमुखनक्षत्र ९०
स्थिर, क्षिप्र, चल, मिश्र, उग्र, मृदु, संज्ञकनक्षत्र ९१
कर्णवेध में प्रयुक्तनक्षत्र ९१
गजकृत्य में प्रयुक्त नक्षत्र ९१
अश्वकृत्य में प्रयुक्त नक्षत्र ९१
पशुओं का स्थान-प्रवेश गमन, उपयुक्त नक्षत्र ९२
हल चलाने तथा बबीजारोपण का मुहूर्त्त ९२

www.drcmraina.com

रोगमुक्ति पश्चात् स्नान विचार ९३
नृत्यारम्भ मुहूर्त्त ९३
कुल, उपकुल, कुलाकुल संज्ञक नक्षत्र तथा उनका उपयोग ९३
त्रिपुष्कर, द्विपुष्कर योग एवं फल ९३
अश्विन्यादि नक्षत्रों के वृक्ष ९४

योगलक्षणाध्यायः-१५

सत्ताईस योगों के स्वामी १०१
त्याज्य योग १०१
एकार्गल-खार्जूरिक चक्र निर्माण १०१

करणलक्षणाध्यायः-१६

कारणों के स्वामी तथा विष्टिवर्णन १०४
भद्रा का अङ्गविभाग से घटिकान्यास एवं फल १०४

मुहूर्तलक्षणाध्यायः-१७

मुहूर्तों की प्रशंसा १०७
दिवा एवं रात्रि मुहूर्त १०७
धिष्ण्यमुहूर्त एवं रविवारादि में निन्द्यमुहूर्त १०७
दिवा पौराणिक मुहूर्त १०८
अभिजित-कुतप लक्षण, निशा पौराणिक एवं सिद्धिप्रद मुहूर्त १०८
क्षणिकपञ्चाङ्गनिर्णय १०८

उपग्रहाध्यायः-१८

उपग्रहों के नाम तथा ज्ञान १११
क्रकच-संवर्तयोगों का वर्णन १११
दग्ध एवं जन्मयोगविचार ११२
सिद्धि-उत्पात, मृत्यु, काण-आनन्दादि योग विवरण ११२

संक्रान्तिलक्षणाध्यायः-१९

सफल संक्रान्तियों के नाम ११७
नक्षत्रानुसारसंक्रमणफल ११७
बवादिकरणों के आधार पर संक्रान्ति वाहनों के नाम ११८
बवादिकरणों के अनुसार संक्रान्तियों के शस्त्र एवं भक्ष्य ११८
बवादिसूर्यसंक्रमानुसार सूर्य की उदित-सुप्त अवस्था इत्यादि ११८

www.drcmraina.com

नक्षत्रों की अन्ध-मन्द, सुलोचनादिसंज्ञा ११९
राश्यानुसार संक्रान्तियों की संज्ञा ११९
संक्रान्तियों का पुण्यकालनिर्णय ११९
ग्रहण संक्रान्ति का जन्म नक्षत्र वशात् फल १२०
क्रूरफल की निवृत्ति हेतु दान १२०
सूर्यचन्द्र एवं ताराबल की विशेषता १२०

गोचराध्यायः-२०

सूर्यादि ग्रहों का गोचरस्थानों में श्रेष्ठवेधस्थान वर्णन १२५
कैसे ज्योतिषी की निन्दा १२६
ग्रहों की निष्फलता १२६
नवग्रहों के रत्न १२७

चन्द्रताराबलाध्यायः-२१

चन्द्रमा वशात् मासफल १३०
जन्म, सम्पत्, विपत् क्षेमादि नौ ताराओं के नाम एवं फल १३०

लग्नप्रकरणाध्यायः-२२

मेषादि द्वादश लग्नों के कृत्य १३३
राशियों का शुभत्व एवं पापत्व १३४
ग्रहों का शुभत्व एवं पापत्व १३५
ग्रहों के युति/दृष्टि से राशियों में स्वभाव परिवर्तन १३५
द्रव्य निक्षेपण का शुभफल १३५
चौर्यकाल वर्णन १३६
शस्त्र, शास्त्र अभ्यासियों का सिद्धिकाल १३६
पशुओं की रक्षा एवं वृद्धि का समय १३६
धर्मारम्भ एवं अभिचारयोग प्रशस्ति १३६
रससंग्रह कालनिर्णय १३६
मुमुक्षु दीक्षा मुहूर्त विचार १३६
श्रुतिस्मृति पुराणोक्त धर्मकार्यों का आरम्भकाल १३७
शिल्पकर्म आरम्भकाल १३७
ज्ञानप्राप्तिकाल १३७
नाट्यारम्भकाल १३७

www.drcmraina.com

पण्यकर्मकाल १३७
जलसम्बन्धी कर्मकाल १३८
औषध क्रियाकाल १३८
सन्धिकाल निर्णय १३८
अभिचार योग्य समय १३८
कृषिकर्मकाल १३८
चन्द्रमा का बलाबल निरूपण १३८
ग्रहों का शुभाशुभत्व निर्णय १३९

प्रथमार्तवाऽऽध्यायः-२३

प्रश्न लग्न से विचार १४५
रविवारादि वशात् प्रथम रजोधर्म का फल १४५
नक्षत्रवशात् प्रथमार्तव का फल १४६
निन्द्य पञ्चाङ्ग में पुष्पदर्शन १५०
स्त्रीगमनवर्जित एवं शान्तिक उपाय १५०
रजस्वला का पाँचवें दिन शुद्धि प्रतिपादन १५०
आधानमुहूर्त एवं गर्भ में पुत्र-पुत्री ज्ञान १५०

पुंसवनसीमन्तोन्नयनाध्यायः-२४

पुंसवन महूर्त विचार १५६
मासाधिपति विचार १५६
लग्न एवं ग्रहशुद्धि विचार १५६
सीमन्त में लग्न शुद्धि विचार १५७

जातनामकर्माध्यायः-२५

जातकर्म नामकर्म काल निर्णय १५९

अन्न प्राशनाध्यायः-२६

शिशुओं का अन्नप्राशन कालनिर्णय १६१
अन्नप्राशन लग्न में भिन्न-भिन्न ग्रहों का फल १६२

चौलकर्माध्यायः-२७

चौलकर्म में समस्त विधान १६४
चौलकर्म में पञ्चाङ्गशुद्धि १६४
सर्वसाधारण क्षौर निर्णय १६५

www.drcmraina.com

क्षौरकृत्य के लिए निषिद्ध समय १६५
कार्य विशेष में क्षौरकर्म सर्वकालिक १६५

उपनयनाध्यायः-२८

उपनयन प्रयोजनम् १६७
उपनयन कालनिर्णय १६७
वर्णानुकूल ऋतुनिर्देश १६८
यज्ञोपवीत के लिए पञ्चाङ्ग शुद्धि १६८
व्रतबन्ध में उपयुक्त नक्षत्र एवं वार १६८
भागवशात् कार्य निर्देश १६९

समावर्तनाङ्कुरार्पणाध्यायः-२९

समावर्तन में काल शुद्धि १७८
मङ्गल कार्यों में अङ्कुरारोपण एवं मृत्तिका लाना १७८
मृण्यमय/वंशपात्रों में देवपूजाविधान १७९
माङ्गलिक कृत्यों में अङ्कुरारोपण १७९

विवाहप्रश्नलक्षणाध्यायः-३०

तीन प्रकार के ऋण, चतुर्वर्ग प्राप्ति में मूलहेतु वर्णन १८२
विवाह प्रश्न विधि १८२
विवाह लग्न वशात् दम्पति का आयुष्य निर्धारण १८२
विवाह प्रश्न लग्न से पुंस्त्रीलक्षणम् १८३
कन्या को वर/वर को कन्या प्राप्ति योग १८३

कन्यावरणाध्यायः-३१

उत्तम मुहूर्त में वाग्दान करने से पुत्रपौत्र विवर्धन १८६
वाग्दान मुहूर्त में पञ्चाङ्गशुद्धि १८६
वाग्दान विधिनिरूपण १८६

विवाहाध्यायः-३२

स्त्रीपुरुषों के विवाह में युग्मायुग्म व्यवस्था १८९
विवाह के लिए उपयुक्त समय व्यवस्था १८९
चतुर्मास्य में मङ्गल कृत्यों का निषेध १८९
श्रीविष्णु प्रसुप्तावस्था एवं गुरु शुक्रास्त विचार १८९
वृद्ध एवं अस्तंगत चन्द्रमा का प्रभाव १९०

www.drcmraina.com

जन्ममासादि व्यवस्था	१९०
त्रिज्येष्ठ विचार	१९०
ग्रहणशूल निर्णय एवं ग्रस्तोदित ग्रहण में विशेष	१९१
मध्याह्न, निशीथ में खण्डाखण्ड व्यवस्था	१९१
विवाह में गुरु सूर्य का बल, समगोचर में पूजा व्यवस्था	१९१
तिथि, वार, नक्षत्रादि का उत्तरोत्तर बलत्व प्रतिपादन	१९१
इक्कीस प्रकार के महादोष	१९२
इक्कीस दोषों का शुभाशुभफल	१९३
कर्तरी योग का फल	१९४
चन्द्रमा का शुभाशुभ फल	१९५
गण्डान्त तिथियाँ	१९५
गण्डान्त नक्षत्र	१९५
गण्डान्त नक्षत्रों का त्याग	१९६
षड्वर्ग विभाग	१९६
राशियों के अधिपति	१९६
होरा-द्रेष्काण विचार	१९७
नवांश द्वादशांशादि विचार	१९७
त्रिशांशपतिविचार	१९७
शुभाशुभ वर्ग विचार	१९७
भृगुषट्क योग, कुजाष्टम योग	१९८
उदयास्तांश शुद्धि, अशुद्धि कथन	१९८
दुर्मुहूर्त दोष	१९९
कालकूट दोष	१९९
विषघटी दोष	२००
कुलिक, यमघण्टक, अर्धयाम संज्ञक वारदोष एवं शुभाशुभफल	२०१
समाङ्घ्रिक एवं एकार्गलदोष	२०१
ग्रहण एवं उत्पात नक्षत्र दोष	२०२
अकालिक गर्जित वृष्टिदोष	२०२
सवैधृति महापातदोष	२०३
सङ्क्रान्ति दोष, सग्रह दोष युक्त लग्न का फल	२०३
कर्तरी दोष लग्न फल	२०३
त्रिकस्थचन्द्र लग्न फल	२०४

www.drcmraina.com

गण्डदोषयुक्तलग्नफल	२०४
पापषड्वर्गयुक्त लग्न का फल	२०४
भृगुषट्कदोषयुक्त लग्न का फल	२०४
अष्टमभौमयुक्त लग्न का फल	२०४
उदयास्तांश शुद्धिहीन लग्न का फल	२०४
दुर्मुहूर्तदोषयुक्त लग्न का फल	२०५
वरवधू विवाह लग्न का फल	२०५
विषनाड़ी दोषयुक्त लग्न का फल	२०५
कुनवांश दोषयुक्त लग्न का फल	२०५
वारदोषयुक्त लग्न का फल	२०५
खार्जूरिक दोषयुक्त लग्न का फल	२०५
उत्पात, ग्रहण नक्षत्र क्रूर, वृद्ध, क्रूरयुतादि लग्न का फल	२०६
अवशिष्ट अल्प दोष	२०६
लग्ननिश्चयार्थ जलयन्त्र निर्माण	२०७
विवाह वेदिका निर्माण	२०८
विवाहलग्नस्थ ग्रहों का फल	२०९
अष्टकूट व्यवस्था	२१४
योनि विवेक	२१५
नाड़ी दोष परिहार	२१६
तारा विवेक	२१६
वर्णकूट व्यवस्था	२१६
राशिकूट व्यवस्था	२१६
अष्टविध विवाह लक्षण	२१७
अभिजित्-गोधूलि लग्न प्रशंसा	२१८
सहोदर कन्याओं का ६ मास के भीतर विवाह निषेध	२१९
सहोदर कन्याओं के विवाह की व्यवस्था	२१९
मूल-आश्लेषा में उत्पन्न पुत्र-पुत्री का विचार	२१९
विवाह के पश्चात बधु प्रवेश व्यवस्था	२२०

पैतृकाध्यायः-३३

दहन व्यवस्था, सपिण्डीकरण	२४१
श्राद्ध के लिए निषिद्धकाल	२४२
महालय पक्ष में श्राद्ध महत्त्व	२४२

www.drcmraina.com

छुरिका बन्धनाध्यायः-३४

छुरिकाबन्धन का शुभमुहूर्त २४९
ध्वजादि संज्ञक छुरिका फल वर्णन २५०

यात्राध्यायः-३५

प्रश्नलग्न, शकुनादि द्वारा यात्रा फल २५३
यात्रा में शुक्र का शुभाशुभ फल २५३
तिथिनक्षत्रशुद्धि, वारदिशाशूल, नक्षत्रशूलादिविचार २५३
ललाटिका योग एवं फल विचार २५४
स्पष्टार्थ ललाटिक योगज्ञान चक्र २५५
दक्षिण दिशा में यात्रा विचार २५६
दक्षिण दिशा यात्रा में पञ्चक निषेध २५७
राहुमुखपुच्छ विचार २५७
ग्रहस्थित्या जयपराजयविचार २५८
यात्रा में द्वादशभावविचार २५९
योग, नक्षत्र, मुहूर्त, शकुनादि विचार २५९
विजययात्रा योग २६०
विजयदशमी प्रशंसा २६३
व्रत, विवाहादि उत्सव में यात्रा निषेध २६३
यात्रा में शकुन विचार २६४
यात्रा से पूर्व ग्रहों की शान्ति २६५
प्रस्थान निर्णय २६६
सिद्धिप्रद निमित्तों का विचार २६७
शुभाशुभ शकुन विचार २६७
सिद्धिप्रद निमित्तों का वर्णन २६८
विरुद्ध शकुनादि में प्राणायाम २६९
छिक्का विचार २६९
युद्धयात्रा में कर्तव्यता विचार २६९

गृहप्रवेशाध्यायः-३६

नव गृह प्रवेश में समय शुद्धि, ग्रह शुद्धि २८२

वास्तु लक्षणाध्यायः-३७

क्षेत्रस्वीकरणम् २८५
भूशुद्धि, शल्यलक्षण एवं द्वारनिर्णय २८५

www.drcmraina.com

एकशीति पदात्मक वास्तुन्यास, शुभाशुभांश निर्णय	२८७
गृहारम्भ में नक्षत्रवशात् ग्रहयोगविचार	२८८
मासशुद्धिः	२८९
अष्टवर्ग विचार	२९०
आय-ऋण विचार	२९०
सम-विषमाय तारा विचार	२९१
वास्तुमुखादिविचार	२९१
वास्तुस्थापनम्	२९२
शङ्कुन्यास का फल	२९२
जातिवशात् शङ्कुमान, समयशुद्धि तथा ग्रहशुद्धि	२९२
शङ्कु स्थापना विधि	२९३
गृहशाला भेद विचार	२९३
१६ प्रकार के घरों का विचार	२९३
सर्वतोभद्र, नन्द्यावर्त, वर्धमान, स्वस्तिकादि घरों के लक्षण	२९४
घर बनाने का क्रम	२९६
पूर्वादिक्रम से आयादिविचार	२९७
अष्टधाजलस्राव वर्णनम्	२९७
आयानुसार गजादि गृहनिर्माणम्	२९८
घर में अनुपयोगी काष्ठ विचार	२९८
दिशानुसार पितृ-भ्रात्रादिघर	२९९
घर में काष्ठेष्टकपर्णादिविचार	२९९
घर में पूर्वादि दिशाओं के क्रम से कूप निर्माण	२९९
घर में मङ्गलकारी वृक्षों का विचार	२९९
वास्तुशान्तिपूजालक्षणाध्यायः-३८	
एकाशीतिपदात्मक वास्तुप्रतिष्ठामहत्व	३१२
राजाभिषेकलक्षणाध्यायः-३९	
राज्याभिषेक में गुरुशुक्रशुद्धि	३१८
राजा के जन्माङ्ग अनुकूलग्रह शुद्धि विचार	३१८
ग्रहगोचर एवं लग्नशुद्धिः	३१९
देवप्रतिष्ठाध्यायः-४०	
कालशुद्धि, पञ्चाङ्गशुद्धि एवं ग्रहशुद्धि कथन	३२२

www.drcmraina.com

नववस्त्रलक्षणाध्यायः-४१

अश्विनी भाद् वस्त्र धारण फलम् ३२६
नवधा वस्त्र में देवनर, पिशाचादि वर्णन ३२६
शंख चक्रादि विभिन्न आकृतियों का फल ३२७
निन्दित वस्त्र परित्याग विधि ३२७
निन्द्यवार नक्षत्रादि में वस्त्र धारण विचार ३२७

अग्न्याधानाध्यायः-४२

अग्नित्रयसेवीप्रशंसा ३३०
अग्न्याधान में लग्न चन्द्रताराग्रहादिशुद्धि ३३०

वृष्टिलक्षणाध्यायः-४३

वर्षा प्रश्न विचार ३३४
बुध, शुक्र सूर्यादि ग्रहों का विशेष विचार ३३४
प्राच्य-प्रतीच्यगत नक्षत्रानुसारी शुक्र का फल ३३४
ग्रहोदयास्तार्द्रा प्रवेश समय वर्षा योग ३३५
वृष्टियोग विशेष ३३५
बृहस्पति-शुक्र में वृष्टि अनावृष्टि योग ३३५
सद्यो वृष्टि निमित्तानि ३३५

उत्पाताध्यायः-४४

काकसंभोगेक्षणोत्पात शान्तिः ३३८
कुण्डनिर्माण पूजा विधि शान्ति विधान ३३८
कपोतपिङ्गलमधुवल्मीक दोषशान्तिलक्षण ३४३

सकलोत्पाताध्यायः-४५

सकलोत्पातदर्शनलक्षण शान्तिः ३४५

शिथिली जननदोष शान्तिलक्षणाध्यायः-४६

शिथिली जनन विचार ३४८
दिशा अनुसार शिथिली विचार ३४८
स्थानभेद से शिथिली फल ३४८
शिथिलीदोष शान्तिविधान ३४९
दिशा अधिपतियों की सभिधाओं के नाम ३४९
व्याहृतिमन्त्रों द्वारा अभिषेक ३५०
मृत्युरूप प्रतिमा का दान ३५०

www.drcmraina.com

इन्द्रलुप्तादि दूषित शरीर दोष शान्तिः-४७

शरीर में पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रलुप्त दूषित मस्तक का फल ३५३

निखिलोत्पातलक्षणाध्यायः-४८

उल्का लक्षणम् ३५५
परिवेषलक्षणम् ३६३
इन्द्रचापलक्षणम् ३६८
गन्धर्वनगरलक्षणम् ३७१
प्रतिसूर्यलक्षणम् ३७२
निर्घातलक्षणम् ३७४
दिग्दाहलक्षणम् ३७६
रजोलक्षणम् ३७८
भूकम्पलक्षणम् ३८०

मिश्रकाध्यायः-४९

गुणवान राजा की प्रशंसा ३८३
राजा का आचार निर्देश एवं लक्षण ३८३
पञ्चाङ्ग, सप्ताङ्ग मन्त्रसिद्धि एवं राजा के गुण ३८३
राजा के नियम ३८४
विभिन्न दातुन प्रकार एवं लाभ हानि ३८४
अश्वशान्तिः ३८७
दीपावली को तैलाभ्यङ्ग विचार ३९०
जन्माष्टमी विचार ३९०
विशेष तिथियों में पूजा विधान एवं फल ३९१
भारतीय प्रान्तों में ग्रहों का वास ३९३
दिनदग्ध मासदग्ध शून्यराशि विचार ३९३
गण्डमूल नक्षत्रों का फल ३९४
गण्डमूल शान्ति विधानम् ३९५
१० प्रकार की सर्वोषधियों का वर्णन ३९६
बालक के अरिष्टयोगविचार ४००
बालाऽरिष्टभङ्गयोग ४०२
जन्म नक्षत्रानुसार शुभाशुभ फल ४०३
जन्मनक्षत्र का नवांश के अनुसार शुभाशुभफल ४०६

❖❖❖

www.drcmraina.com

ॐ

॥श्रीगणेशाय नमः॥

कश्यपसंहिता

अथशास्त्रस्वरूपाध्याय॥१॥

मङ्गलाचरणम्

महेशाय नमस्तस्मै सच्चिदानन्दमूर्तये।
नुतामरकिरीटौघ प्रभाविस्फुरिताङ्घ्रये॥१॥

नारायणी टीका–प्रणत देवगण के मुकट समूह के प्रकाश से चमचमा रहे हैं चरणकमल जिनके, ऐसे प्रशंसनीय अविनाशी सत्, चित्, आनन्द (सच्चिदानन्द) स्वरूप भगवान् शङ्कर जी को प्रणाम है॥१॥

ज्योतिषशास्त्र प्रवर्त्तक

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रिः पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिमनुरङ्गिराः॥२॥
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टा दशश्चैते ज्योतिश्शास्त्र प्रवर्त्तकाः॥३॥

नारायणी टीका–सूर्य, पितामह, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अङ्गिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु और शौनक ये अष्टादश ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्त्तक हैं॥२-३॥

त्रिस्कन्धज्योतिषनिरूपणम्

स्कन्दत्रयात्मकं शास्त्रमाद्यं सिद्धान्तसंज्ञकम्।
द्वितीयं जातकस्कन्धं तृतीयं संहिताह्वयम्॥४॥
ग्रहाणां मध्यमाभुक्तिः स्फुटभुक्तिरनन्तरम्।
दिक्साधनं ततश्छाया लग्नकाल विनिर्णयः॥५॥
चन्द्रार्कग्रहणं सम्यक् तयोश्च परिलेखनम्।
समागमो युद्धभेदो भग्रहाणां युतिस्तथा॥६॥

www.drcmraina.com

"सिद्धान्त विषयानुक्रमः"

उदयास्तमय ज्ञानं चन्द्रशृङ्ग नतोन्नतिः।
पात वैधृतयोर्भेदौ भूगोलं यन्त्रलक्षणम्॥७॥
मानक्रिया मानभेदाश्चाद्य स्कन्धे प्रकीर्तिताः।
राशिभेदः खेटयोनिर्वियोनिर्जन्मलक्षणम्॥८॥

नारायणी टीका-ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कन्ध होते हैं, सिद्धान्त, जातक और संहिता, प्रथम स्कन्ध में ग्रहों की मध्यम भुक्ति, स्फुट भूक्ति, दिक्साधन, छाया साधन, लग्नकाल निर्णय, सूर्यचन्द्रग्रहण और उनकी परिलेखन पद्धति, समागम, ग्रहयुद्धभेद, नक्षत्र और ग्रहयुति, उदयास्तज्ञान, चन्द्रशृङ्गोन्नति, साधन, पात और वैधृति के भेद, भूगोलाध्याय, यन्त्रलक्षण, नवविधमान तथा मानभेद ये सभी प्रथम सिद्धान्त स्कन्ध में हैं॥४-८॥

"होराशास्त्रविषयानुक्रम"

निषेको जननं पुंसामरिष्टं भङ्गलक्षणम्।
आयुर्दायो दशाभेदा भेदाश्चान्तर्दशासु॥९॥
अष्टवर्गः कर्मजीवो राजयोगा अनेकशः।
चन्द्रयोगा द्विग्रहाद्याः प्रव्रज्या योगसम्भवाः॥१०॥
राशिशीलं दृष्टिफलं ग्रहभावफलं ततः।
आश्रयाख्याश्च ये योगाः सङ्कीर्णसम्भवाः॥११॥
स्त्रीजातकं नष्टयोगं निर्याणं नष्टजातकम्।
द्रेष्काणश्च क्रियायोगा द्वितीयस्कन्धसम्भवाः॥१२॥

नारायणी टीका-राशिभेद, ग्रहयोनि, वियोनिजन्म, निषेक प्रकरण, जन्माऽरिष्ट, अरिष्टभङ्ग, आयुर्दाय, दशाऽन्तरदशाओं का भेद, अष्टवर्ग, कर्मजीव, नाना प्रकार के राजयोग, चन्द्रयोग, द्विग्रहयोग, प्रव्रज्यायोग, राशिशील, दृष्टिफल, ग्रहों का भावफल, आश्रययोग, संकीर्णयोग, स्त्रीजातक, नष्टजातक, निर्याण, द्रेष्काण और क्रियायोग ये द्वितीय जातक स्कन्ध के विषय हैं॥९-१२॥

संहिता विषयानुक्रम

आदौ शास्त्रोपनयनं खेटचारोऽब्दलक्षणम्।
तिथिवासर नक्षत्र योग तिथ्यर्ध लक्षणम्॥१३॥
मुहूर्तोपग्रहः सूर्यसंक्रान्तिर्गोचर क्रमः।
चन्द्रताराबलश्चैव क्रियाः षोडशकर्मणाम्॥१४॥

छुरिकाबन्धनं यात्रा प्रवेशो वास्तुलक्षणम्।
नृपाभिषेचनं देव प्रतिष्ठा वस्त्रलक्षणम्॥१५॥
अग्न्याधानं मेघगर्भं निखिलोत्पातलक्षणम्।
तच्छान्तिर्मिश्रकाध्यायस्तृतीय स्कन्धसम्भवाः॥१६॥

नारायणी टीका-शास्त्रोपनयन, खेटचार, संवत्सरलक्षण, तिथिवार नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त्त, उपग्रह, सूर्यसंक्रान्ति, गोचरक्रम, चन्द्रताराबल, षोडशसंस्कारों के मुहूर्त्त, छुरिकाबन्धन, यात्रा, वास्तु, गृहप्रवेश, राजाभिषेक, देहप्रतिष्ठा, वस्त्रलक्षण, अग्न्याधान, मेघगर्भ, उत्पात और उनकी शान्ति, मिश्रका अध्याय, यह तृतीय स्कन्ध के लक्षण हैं॥१३-१६॥

संहिता प्रतिज्ञा

एवंलक्षण संयुक्तमुक्तं स्कन्धद्वयन्ततः।
साम्प्रतं संहिता स्कन्धमेवं लक्षणसंयुतम्॥१७॥
वक्ष्येऽहं कश्यप ब्रह्माहितार्थं देहधारिणाम्।
सम्बन्धस्तस्य शास्त्रस्य वेदाङ्गमिति धातृता॥१८॥

नारायणी टीका-इस प्रकार लक्षणों सहित दो स्कन्ध कहे गये हैं। अब देहधारियों के कल्याणार्थ मैं कश्यप नामक प्रजापति उक्त लक्षणों से युक्त तृतीय संहिता स्कन्ध का वर्णन करता हूँ; क्योंकि ज्योतिषशास्त्र और वेद का परस्पर अन्योन्याश्रय भाव सम्बन्ध है॥१७-१८॥

ज्योतिषअध्ययन का प्रयोजन

शुभाशुभस्य जगतामभिधेयं निरूपणम्।
ग्रह ग्रहण संक्रान्तिर्यज्ञाध्ययन कर्मणाम्॥१९॥
प्रयोजनं व्रतोद्वाह क्रियाणां काल निर्णयः।
एतद्विना न सिद्ध्यन्ति श्रौतस्मार्ताखिलाक्रियाः॥२०॥

नारायणी टीका-संसार का शुभाशुभ निरूपण, ग्रहचार ग्रहण, संक्रान्ति, यज्ञ, विद्याध्ययन, व्रतबन्ध, विवाहादि संस्कारों का काल निर्णय ज्योतिषशास्त्र का प्रयोजन है। इस शास्त्र के विना श्रौत, स्मार्त विहित सभी क्रियाकलाप सिद्ध नहीं हो सकते॥१९-२०॥

ब्राह्मणलक्षणम्

अध्येतव्यं द्विजैर्यत्नात् पुण्यमायुर्यशस्करम्।
पुण्यकाल परिज्ञानादश्वमेध फलं लभेत्॥२१॥

पुण्यकालज्ञ यो वेत्ति स तु वेत्ति पराङ्गतिम्।
कालज्ञानेति कुशलं तदेवा ब्राह्मणं विदुः॥२२॥

इतिश्री ब्रह्मर्षिकश्यपप विरचितायां महासंहितायां शास्त्रस्वरूप कथनं नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

❖❖❖

नारायणी टीका–अतः ब्राह्मणों को चाहिए पुण्य, आयु और यशोदायक इस शास्त्र का अध्ययन करें। पुण्यकाल के ज्ञान से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है, जो पुण्यकाल को भलीभाँति जानता है, वही परमगति को पहचान सकता है। कालज्ञान में जो अत्यन्त कुशल हो देवगण उसे ही ब्राह्मण समझते हैं॥२१-२२॥

कश्यपसंहिता के शास्त्रस्वरूप कथन अध्याय की
"नारायणी" हिन्दी टीका सम्पूर्ण॥१॥

❖❖❖

पाठानन्तरम्-

१. स (ने) नतामर, म-सदामर (नुतामर)
ड (म)-च्छुरिताङ्घ्रये→ (विस्फुरिताङ्घ्रये)
२. ब-ज-विशिष्टो, म-वशिष्ठा→ (वसिष्ठो)
स-ड, म-गर्गाव.....॥→ (गर्गो)
३. स, ने-ष्टादशेवै, म-ष्टादशश्चैते→ (शौनकोऽष्टादशश्चैते)
४. ब, म-संज्ञितम्→ (संज्ञकम्)
स-म.....तस्कन्धं→ (जातक स्कन्धं)
५. ब-स्फुटतद्भु अत्र "ु टु" कारस्योपरिरक्तरागेश "ट" इति
—समुट्टंकितम्→ (स्फुटभुक्तिरनन्तरम्)
स, म-दिवसाधने→ (दिक्साधनं)
ड, म-निर्नयः, अत्राप्पिरक्तरागेमैव "ण" रूपेणशोधितम्। → (विनिर्णयः)
६. अ-ने-ग्रहण (→ ग्रहणं)
ड, ज-ग्रहाणां युतयस्ततः, नन-ग्रहर्क्षाणां च संयुतिः—
(→ भग्रहाणां युतिस्तथा)
७. अ, ने-स्तमनं ज्ञानं (→ उदयास्तमयज्ञानं)
ब, ने-शिरंगो, ज-नतोन्नतिम् (→ चन्द्रशृङ्गनतोन्नतिः)
स, म-श्चपातवैधृत्यै, (→ पात वैधृतयोः)
ड, ज-भूगोलयत्र, ने-भेदोभूर्गो, म-पाठोनास्ति (→ भूगोलंयन्त्र)
८. स-म-भेदोभेदयो निः (→ खेटयोनिः)
ड-म-जन्मक्षीणः (→ जन्मलक्षणम्)

अथसूर्यचाराध्यायः।।२।।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सूर्य चारमनुत्तमम्।
सूर्यचारवशादेव निखिलं काल निर्णयः।।१।।

नारायणी टीका-इसके पश्चात् उत्तम सूर्यचार का वर्णन करता हूँ। सूर्यचार के द्वारा ही सभी प्रकार का कालनिर्णय किया जाता है।।१।।

सङ्क्रान्त्यः स्युमेषाद्याश्चैत्रमासादिषु क्रमात्।
नियमेन भवेत्तत्र त्वधिमासे समागते।।२।।

नारायणी टीका-मेषादि सौरसंक्रान्तियें क्रमशः चैत्रादि मासों में पाई जाती हैं और वहाँ नियम से अधिमास के प्राप्त होने पर वक्ष्यमान विधान लागू होता है।।२।।

यस्मिन्मासेऽर्क सङ्क्रान्तिर्दर्शान्तात्प्राक् परापरम्।
दर्शमुल्लङ्घ्य भवति संसर्पः सोऽधिमासकः।।३।।

नारायणी टीका-जिसचान्द्र मास में सौर सङ्क्रान्ति अमान्त से पूर्व एवं दूसरी अमान्त के बाद में होती है अर्थात् जिस चान्द्रमास में सूर्य सङ्क्रान्ति न हो, उसे संसर्प या अधिमास कहते हैं।।३।। (असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः)

अहंसप्रतिक्षयमासलक्षणम्

आरभ्य शुक्लप्रतिपत् प्रवेशात्संक्रमद्वयम्।
आगामीन्दुक्षयस्यान्तान् प्राक् न्यूनाख्यस्त्वहंस्पतिः।।४।।

नारायणी टीका-शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक दो सौर संक्रान्तियां हो जायें तो उसे न्यूनमास, क्षयमास या अहंस्पति कहा जाता है।।४।।

क्षयमासाधिमासनिर्णय

न्यूनमासस्तुलाषट्केत्वधिमासस्तु सर्वदा।
स्फुटार्क संक्रमाद्विन्धान् न्यूनमासधिमासकौ।।५।।

नारायणी टीका--न्यूनमास तुलादि छः (६) राशियों में सूर्य के रहने पर ही होता है, अधिमास सर्वदा सम्भव है। सूर्य स्पष्ट की संक्रान्ति से ही क्षयमास और अधिमास का निर्णय करना चाहिए।।५।।

क्षयाधिमास में शुभकार्यवर्जित

मासौ न्यूनाधिकौ प्रोक्तौ सर्वकर्म बहिष्कृतौ।
मास प्राधान्यकं कर्म विनापि ऋतुसूचकम्।।६।।

नारायणी टीका-क्षयमास और अधिमास दोनों समस्त प्रशस्त कार्यों में

वर्जित हैं, विना ऋतु के सम्बन्ध से केवल मास की ही प्रधानता में शुभकर्म करने चाहिए।।६।।

"अश्विन्यादि नक्षत्रों में गोचरगत सूर्यफल"

दस्त्रभादिद्वितीयस्थेऽर्के यदि वृष्टिर्भवेत्तदा।
क्षेमंसुभिक्षमतुलं भीतिदोषोऽग्निधिष्ण्यगे।।७।।

नारायणी टीका-अश्विनी और भरणी नक्षत्र में सूर्य होने पर वर्षा हो तो जगत के लिये अत्यन्त कल्याणप्रद और सुभिक्षप्रद होती है; परन्तु कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो जगत में भय होता है।।७।।

आर्द्रा प्रवेश की विशेषता

रोहिणी द्वितयस्थेऽर्के सस्यवृद्धिर्मनोजयः।
रौद्रनक्षत्रगे सूर्ये यदि वृष्टिर्भवेत्तदा।।८।।
अनल्पमल्पवृष्टिः स्यादीतिदोषस्त्वनर्घता।
आर्द्रा प्रवेशे वृष्टिः स्यात्सार्धमासमवर्षणम्।।९।।
दिवार्द्रा सस्य नाशाय रात्रौ सस्याभिवृद्धये।
अस्तमानेऽर्धरात्रे चेन्ममहदर्घः सुभिक्षकृत।।१०।।

नारायणी टीका-रोहिणी और मृगशिरा के सूर्य में वर्षा होने पर अन्न की वृद्धि, मानसिक प्रबलता, आर्द्रा नक्षत्र में होने पर अनावृष्टि, ईतिदोष व महर्घता का भय रहता है, आर्द्रा प्रवेश के समय यदि वृष्टि हो जाए तो डेढ़ मास तक वृष्टि नहीं होती, दिन में सूर्य का आर्द्रा प्रवेश हो तो सस्यनाश, रात्रि में होने पर सस्यवृद्धि, सूर्यास्त तथा अर्द्धरात्रि के समय प्रवेश होने पर महंगाई और सुभिक्ष क्रमशः समझें।।८-१०।।

पुनर्वसु इत्यादि नक्षत्रों में सूर्यफल

आदित्यादि द्विदैवान्तर्दशर्क्षाधिष्ठिते रवौ।
सस्यवृद्धिः सुभिक्षतं स्याद्विना सिंह प्रवेशनम्।।११।।

नारायणी टीका-पुनर्वसु से विशाखा तक दश नक्षत्रों में सूर्य के रहने पर केवल सिंह सङ्क्रान्ति को छोड़कर यदि वर्षा हो तो अन्नवृद्धि तथा सुभिक्ष होता है।।११।।

मित्रभात्त्रियस्थेऽर्के यदि वृष्टिर्भवेत्तदा।
नृणां व्याधिभयं स्वल्पं सस्यानामीतितो भयम्।।१२।।

नारायणी टीका-अनुराधा से तीन नक्षत्रों (अनु. ज्ये. मू.) में सूर्य के होने पर वृष्टि हो तो मनुष्यों को रोग, अन्नह्रास एवं ईतियों (अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डीदल प्रकोप, मूषकप्रकोप, पक्षी प्रकोप तथा राष्ट्र विप्लव) से भय हो।।१२।।

पूर्वषाढां गते भानौ जीमूते परिवेष्टिते।
तुषारानलयुक्ते वा रिक्ताखिलदिनेष्वपि॥१३॥
क्रमादार्द्रादिके वृष्टिरवृष्टिस्तैरसंयुते।
विश्वभादृक्षषट्केऽर्के स्थिते वृष्टिर्भवेत्तदा॥१४॥
सुवृष्टिः क्षेममारोग्यं नृपाः स्वस्थाश्च सर्वदा।
रेवती सञ्युते सूर्ये यदि वृष्टिर्भवेत्तदा॥१५॥
पूर्वाषाढ़र्तु भङ्गः स्यादाऽऽर्द्राधेषु न वर्षणम्।
गणितागत कालात्तु छायाद्यैः पूर्वतोऽयनम्॥१६॥
भवेद्विपत्तिर्जगतः पश्चाच्चेत्क्षेमुत्तमम्।

नारायणी टीका-पूर्वाषाढ़ा में सूर्य के रहते बिजली, आँधी और वर्षा से युक्त साढ़े तीन दिन बादलों से आकाश ढका रहे तो उसके पश्चात् आर्द्रादि नक्षत्रों में क्रमशः सूर्य के जाने पर वर्षा अच्छी होती है, यदि वर्षादि लक्षणों से रहित आकाश निर्मल रहे तो अनावृष्टि होती है।

उत्तराषाढ़ा से उत्तराभाद्रपदा तक छः (६) नक्षत्रों में वर्षा होने पर सुन्दर वृष्टि जगत के लिए शुभ और आरोग्यप्रद एवं राजाओं के लिए स्वस्थप्रद होती है। पूर्वाषाढ़ा में वर्षा न हो तो आर्द्रादि में भी वृष्टि नहीं होती। गणित एवं छायादि साधनों से यदि अयन परिवर्तन पहले हो जाए तो जगत में विपत्ति होने के उपरान्त उत्तम कल्याणकारी होता है॥१३-१६½॥

तामसकीलकछादितरविमण्डलफल

त्रयस्त्रिंशद्राहु सुतास्तामसाख्या सकीलकाः॥१७॥
तानर्कमण्डले दृष्ट्वा वर्णाकारैः फलं वदेत्।
सूर्यमण्डलगाः पापाश्चन्द्रमण्डलगाः शुभाः॥१८॥

नारायणी टीका-राहु के तामस कीलकादि तीस पुत्र सूर्यमण्डल को ढक लें तो उनके वर्ण और आकारों के द्वारा फल कहना चाहिए; क्योंकि सूर्यमण्डल में इन का दिखाई देना पाप है; परन्तु चन्द्रमण्डल में दिखाई दें तो शुभ है॥१७-१८॥

चन्द्रमण्डल का वर्णन

चन्द्रेऽप्यनिष्टदाः खड्ग कबन्धध्वांक्षसन्निभाः।
उद्गमे तामसादीनां रजो वृष्टिर्महानिलः॥१९॥
दिग्दाहस्त्वथ भूकम्पनीहाराशनिपातनम्।
एवमाद्या महोत्पाताः स्युस्ते च स्वफलप्रदाः॥२०॥

नारायणी टीका-यदि खड्ग, कबन्ध एवं ध्वांक्ष के समान चन्द्रमण्डल में दिखाई दें तो अनिष्टकारी होते हैं। तामसादियों के उदय होने पर पहले ही धूलिवर्षण, अग्निवर्षण, दिग्दाह, भूकम्प, हिमपात, वज्रपात इत्यादि महापात हों तो वे अपने-अपने आकार के अनुसार फल देते हैं।।१९-२०।।

तामसकीलकादि उत्पात वर्णन

निमित्तवस्तुतो यत्नात् फलं नैमित्तकस्य च।
खड्गाकारे नृपवधं कबन्धे व्याधितो भयम्।।२१।।
ध्वांक्षे चौरभयं कीलकाकारेऽपि त्वनर्घता।
राजोपकरणाकारैश्छत्राद्यैरर्कमण्डले ।।२२।।
राजाबन्धोऽन्यराजत्वं स्फुर्लिङ्गैर्गजनाशनम्।
मेघैविद्धं नृपवधं करोति रविमण्डलम्।।२३।।

नारायणी टीका-नैमित्तक वस्तुओं से शकुन जानकर फल कहना चाहिए। खड्गाकार तामसादि सूर्यमण्डल में दिखाई दें तो राजवध, कबन्धाकार हों तो रोगभय, ध्वांक्ष सदृश हों तो चोरभय, कीलकाकार हों तो हानिप्रद, राजचिह्न छत्रादि आकार हों तो राजबन्धन व राष्ट्रविप्लव, चिंगारियों से युक्त होने पर गजों का नाश और बादलों से विद्ध होने पर राजवध करते हैं।।२१-२३।।

सूर्य का रश्मिवशात शुभाशुभफल

सितरक्तैः पीतकृष्णैः पाटलैर्विप्रपूर्वकान्।
चमूपो नाशमायाति ताम्रैरूर्ध्वमुखैःकरैः।।२४।।
पीतैर्नृपात्मजः श्वेतैः पुरोधाश्चित्रितैर्जनाः।
राजाधूमैः पिशङ्गैस्तैर्वृष्टिश्चाधोमुखैस्तथा।।२५।।

नारायणी टीका-श्वेत, रक्त, पीत, काला एवं गुलाबी रंग होने पर ब्राह्मणादि वर्णों को हानिकारक, ताम्रसदृश आकाश की ओर फैली हुई किरणों के द्वारा सेनापति का नाश होता है, पीत होने पर राजपुत्र, श्वेत में राजपुरोहित, चित्रवर्ण में राजसेवक, धूमिल या भूरे रंग के होने पर राजा को कष्ट एवं अधोमुख होने पर वृष्टि होती है।।२४-२५।।

ऋतुवशात सूर्य का वर्णफल

उदयास्तमये स्वस्थं सर्वेषां न तथा विधैः।
शिशिरे ताम्रवर्णोऽर्कः शुभदा कपिलोऽपि वा।।२६।।
वसन्ते कुङ्कुमनिभः शिवायहरितोऽपिवा।
ग्रीष्मे स्वर्ण निभश्चित्रः प्रावृष्यम्बुजगर्भ तत्।।२७।।

शरद्हेमन्त समये लोहिताभः सूर्यमण्डलः शुभप्रदः।
लोकानां भयदो ग्रीष्मे लोहितः सूर्यमण्डलः॥२८॥
हेमन्ते रोगदः पीतः कृष्णः प्रावृषि वृष्टिकृत्।
आखण्डलधनुः खण्डनिभोभूपविरोधकृत्॥२९॥

नारायणी टीका–शिशिर ऋतु में उदयास्त समय सूर्य का ताम्र व कपिलवर्ण शुभ होता है। वसन्त में कुंमकुम व हरित कल्याणकारक, ग्रीष्म में स्वर्णसदृश विचित्रवर्ण, वर्षा में कमलगर्भ के समान, शरद् एवं हेमन्त में रक्तवर्ण शुभ माना गया है। ग्रीष्म में सूर्यमण्डल का लालिमायुक्त होना लोकभय कारक, हेमन्त में पीतवर्ण रोगकारक, वर्षा में कृष्णवर्ण वृष्टिकारक, खण्डाकार इन्द्रधनुष के समान राजविरोधकारक जानना चाहिये॥२६–२९॥

न वर्षति द्वादशाब्दं वर्हिपत्र निभोपमः।
युद्धायशशारक्ताभो राजान्यत्वं विधूपमः॥३०॥
श्यमोऽर्कः कीटभयकृच्छस्त्रभीर्भस्म सन्निभः।
छिद्राणि मण्डले भानोर्दृश्यन्ते राजमृत्युवे॥३१॥

नारायणी टीका–यदि सूर्यमण्डल मयूरपंख सदृश हो तो बारह (१२) वर्ष तक अनावृष्टि, खरगोश के रक्त तुल्य होने पर युद्धकारक, चन्द्राकार, राष्ट्रविप्लव, श्यामवर्ण कीटभयप्रद, भस्म सदृश शस्त्र भीतिप्रद एवं सूर्यमण्डल में छिद्र दिखाई देने पर राजा की मृत्यु होती है॥३०–३१॥

सूर्यचार विशेषता

कुम्भसदृशः क्षुद्भयदो भूपहातोरणाकृतिः।
देशाहछत्रस्वरूपस्तु भूपहाखण्डमण्डलः॥३२॥
उल्कादिपतनं सन्ध्याकाले राजविनाशनम्।
परिविष्टौ सदार्केन्दु पक्षं पक्षर्धमेव वा॥३३॥
युद्धादौ राज्यहन्तारा उपग्रह समन्वितौ।
अस्त्राकारैघनैश्छन्नस्तूदयास्तमितो रविः॥३४॥
युद्धदोष्ट्रखराकारै रुद्रसूर्यभयप्रदः।
सतमस्कं पर्वं विना सूर्येन्दोर्मण्डलंयदि॥३५॥
आतंक पावकभयं करोत्यर्थ विनाशनम्।
ऋतूक्तैर्भूतिकिरणैर्मण्डलैर्मङ्गलप्रदः ॥३६॥

इति श्री ब्रह्मर्षि कश्यप विरचितायां महासंहितायां सूर्यचारेध्यायो द्वितीयः॥२॥

❖❖❖

नारायणी टीका-कुम्भाकार, दुर्भिक्ष, तोरणाकार राजनाशक, छत्रस्वरूप देशनाशक तथा खण्डित मण्डल भी राजनाशक होता है। सन्ध्या समय उल्कादि का गिरना राजनाशक, सूर्य एवं चन्द्रमा एक सप्ताह या एकपक्ष निरन्तर परिवेश में दिखाई दें अथवा उपग्रह से युक्त हों तो युद्धादि में राज्यनाशक एवं अस्त्राकार बादलों से ढका हुआ उदयास्तकालीन दिखाई दे या ऊँट वा गदहा आकार युक्त बादलों से युद्धकारक, भयङ्कर बादलों से युक्त भयंकर हो। यदि सूर्य एवं चन्द्रमा का मण्डल विना ग्रहण के काला दिखाई दे तो आतंक अग्निकाण्ड एवं धनधान्य नाशक होता है। यदि ऋतु के अनुकूल सूर्यमण्डल की किरणें चमकती हुई दिखाई दें तो मङ्गलप्रद होती हैं। इस प्रकार विचारपूर्वक सूर्यचार का फलादेश कहना चाहिए।।३३-३६।।

।।कश्यपसंहिता के सूर्यचाराध्याय की "नारायणी" हिन्दी टीका सम्पूर्ण।।२।।

❖❖❖

पाठान्तरम्—

१. म-अ ब स ड-पाठोनास्ति

२. स-म-नियमान भवेद्यत्र (→ नियमेनभवेत्तत्र)
ड, ज-समागमे, ने-मासोऽसमाग
(→ त्वधिमासे समागते)

३. अ, ज-मासेकर्संक्रान्तिदशा प्रा० (→ यस्मिन्मासेऽर्क सङ्क्रान्ति)
ड, ज-संसर्पोऽधिमासकः, ने-संससर्पोऽधिमासक
(→ संसर्पः सोऽधिकमासकः)

४. ब, ज-प्रवेशासंक्रम् (→ प्रवेशात्संक्रम)
स, म-आगामीन्दोः (→ आगामीन्दु)
ड, ज-प्राङ्ताख्यस्त्यहर्पतिः, ने-प्राङ्नताख्यवहर्प
म-क्षयस्त्यातां प्राज्यूकाख्यस्त्वहस्पतेः (→ प्राक्न्यूनाख्यस्त्वहंसपतिः)

५. ज, अ, ब, स, ड—पाठोनास्ति
म, अ-स्तुलापूर्वे...., (→ न्यूनमासस्तुलाषट्के)
ने,-ब-स्फुटार्कसंक्रामौ द्वौचेत्रयोऽब्देत्वधिमासकः
म-स्वदिर्क संक्र.....न्त्याधिमासकः, अत्रमूलेपीयूषधारोक्त कश्यप पाठो निर्धारितः।।
("स्फुटार्कसंक्रमाद्विन्धान् न्यूनमासधिमासकौ)

६. अ, ने-धिककौक्रोतौ.....बहिःकृतौ, मृमासान्न्यूनाधिकाएतस्सर्व..... ....बहिष्कृताः
(→ मासौ न्यूनाधिकौ प्रोक्तौसर्वकर्मबहिष्कृतौ)
स, ज-प्राधान्येकं, म-प्रधानकं (→ प्राधान्यकं)
ड, म-विनाऽपि (→ विनापि)